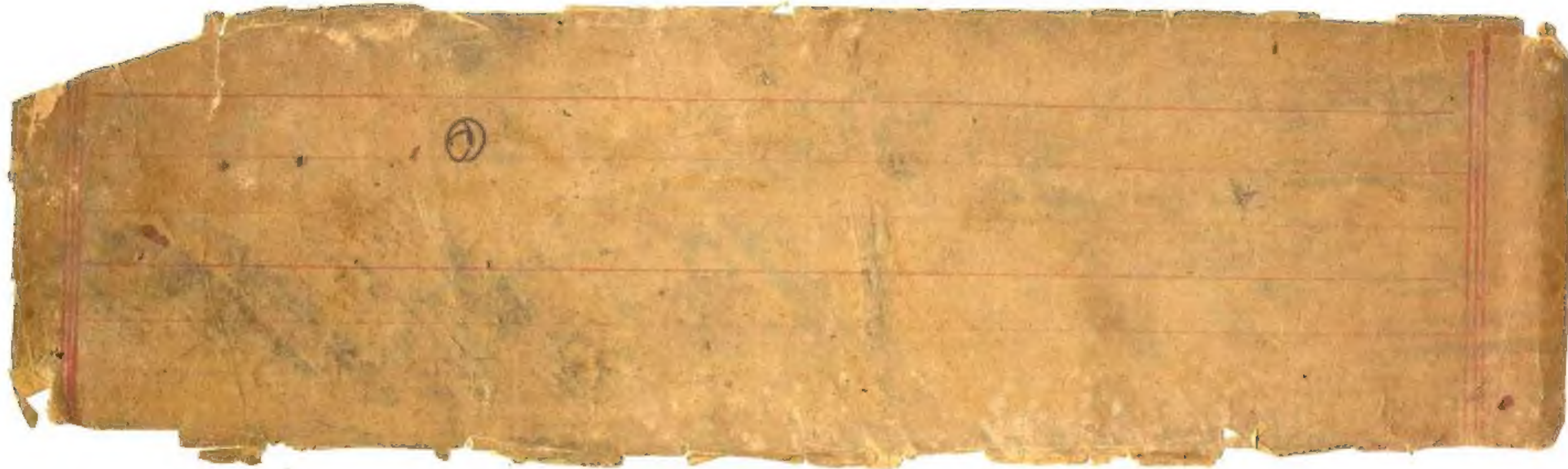




एवं समाधि समा यनान रुवने यवजाधिसुमनाधिसमदं सर्वदुर्गोनियाविल्लाधनराजं नाम वथा मरुदयानि श्वारयार्डे लाधय रं सर्वया यविल्लाध निशुद्ध सर्वकर्मो वरधाविशुद्ध स्वादा ॥ ५ ॥ निष्ठाधिका गीवदः खानियमाकानि वरु खयः स्वादा ॥ यनवयवंद वहु वृदं सर्वे यायद्वदयं डं गहयनवयवंद वहु सर्वदुर्गोनियाविल्लाधनरुदयहं गयनवयवंद वहु मं के यनसवनमाण प्रायालायना सत्वानां सर्वदुर्गोनियाधिका	स्वाधिया या राधनान करम व सर्व सत्वा वसजागा ॥ यनवयवंगुद्धदय साधन आगद्वदयं डं सर्वया यलाधनी हं रु	द्वगोनियाविल्लाधन ॥ सर्वेन वरुनियुक्त म शार्डे लाधनी लाधय सर्वया या सर्व सर्व स द्वायनवयवंद वहु वृदं सर्वेन आगद्वद
---	--	---

लाया सत्वा विमा कनकमिदं रुवनि ॥ डं नमारुगवव सर्वदुर्गोनियाविल्लाधनराजाय कथा गगाया रुक संश्रुतं वदाय ॥ नयथा ॥ डं लाधन रं विल्लाधन शुद्धा विशुद्ध सर्वो वरधा विल्लाधन स्वादा ॥ डं वेविकया शार्डे सर्वे विगुगा रु ॥ डं सर्वे वि लाया मरु ॥ डं सर्वे विमदा वजा रु वजी व यूज डी शा गीगाया मरु ॥ डं सर्वे विमदा वजा रु वजी यारमिका यूज मृ ॥ नृत्या या मरु ॥ डं सर्वे विमदा या यविल्लाधनी वम रं ध्यान या वमिका यूज हं रु	सर्वे विमदा वर धा मि विल्लाधय हं रु नयो ॥ डं सर्वे विमदा रु ॥ डं सर्वे विमदा यारमिका यूज डी मा ला या मरु ॥ डं सर्वे वि	॥ डं सर्वे विगु हं ॥ डं सर्वे विगु डी ॥ रु ॥ डं वजा रु वदानया लमिका यूज हं ॥ ॐ सर्वेन आगकम दा वजा रु वजा कियारमिका
--	---	---

त्याले कमन सावयमाना सावयकादवगाथासमाधिकमनरुमयनरुआदगोनियविष्ठाधनं सिद्धिं रुवकुआयनवयवंदवद्वसर्वदुर्गोनियविष्ठाधनं भकावाडा सा नथागकस्य शुक्रं हृदय मिदं त्वागिनिविष्ठायाश्चा वादीवायावाव द्वाव निमद्योनिस्त्रानिस्त्रप्रमाणाना यष्ठाकि धवागस्योया निवानि विष्ठाया धिननि कागि र्द्वकि नि नदुर्गोनि क्कियुव्यश्चिदवनागय कय सक्त सयुक्त निर्यक्रवादीनां यथां काश्चित्मनवा ययम	कृतयवावा कुरददिगावा यः काश्चित्वा यिकस्या ॥ ॐ देवमानि स्वानमवधनि मधुलक्ष्यथा वयवध्वा र्हेयिकादद	ममायं शुष्ठाकि आवयकि वावयमि लिखि सयुक्त्वययुक्त्वा दुर्गोनिनिमिलानि वा ना यजाश्चामक्रार्थयः काश्चि हावयमि वाव न
--	--	---

कृतयवणा सिधिनननवकवृत्त्यज्ञा समनकवनवविमुवाकदवनिवा योयात्यद्योना ननात्यत्राः समकः सर्वगथागनाधर्मगामे शि सयिक्त्वेकि याकिमव सोरुवकि जवेवर्कि कारुवकि ॥ सन्नगेश्व युवा जना सिध्या सुखमनरुवकि ॥ दवद्वसं खवेद्विखेवमाह ॥ रगवसर्वदुर्गोनिवधीरु वसंमा कं वृक्षोवा अं गमा रोदुर्गयन्ता सुध रगवा न्ना क्कमनिः सर्वदुर्गोनियविष्ठाधनरु नवजं नामसमाधिसमायद्य सर्वगथागनदुर्गोनियविष्ठा	नियतारुवकि सर्वगगन कृतयुजाध कयनालायि कलाकारुनसर्वसयुक्तव नानादिनसखक वधाययथाखक वधाय	रुवकि ॥ यदीनावरणाव सर्वगथागन कालः कि ॥ अथदवद्वारगगुक्तयययदकिधीरु सर्वः सर्वदुर्गोनि यथिकवणा या सत्वानुर्क
---	---	--

धनं कजा गजं नाम मधुलं सावयन् ॥ गत्वा धनं भावा नाथि नं सायि नं ॥ यथ मं गावधा गी विजन मनान् कल यदल सृद सक मा ला मन नि य धु ॥ १५ ॥ गध मधुल व
 कृत्वा यध यवा ययुजा करनी या ॥ नन ४ म ॥ वे धमने वात्मा सावयीत्वा आत्माने दं का ॥ वध वज काला वं सावयन् ॥ नस्य क ॥ १६ ॥
 वध यय मस्या यवि दला ड प्र काल न वड म ॥ धुलं गस्थाय वि दं का वध यय ॥ १७ ॥ का व
 का र वनि मकुजा यदा मा रु व यै ॥ १८ ॥ द रु द ॥ यसा म ॥ १९ ॥ शी क मा काल न वड मधुलं म ॥
 काला म ॥ २० ॥ नि ली य वज रु का रु व नि ॥ सवे मडा वध क मा रु व ॥ नगा व का वज सा व ना क रु ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

या ग्ना वज वज कल कृत्वा हृदय का धे मान सभा नाट मरु स वज वकाट रु द रु गी स्म ता ना ग ना वजा रु मन नि य धु ॥ वज क र कि री य व वज मा ला री य वा ग्ना ॥
 की या ग्ना डं वज कालान रा के दं ॥ १०१ ॥ यि री य ॥ रु मा मि नि ॥ १०२ ॥ वज वजा रु द रु मा दि ना ॥ १०३ ॥ वि सं वज वज सा य वि री य व य ग्ना डं रु मे ॥
 नि ॥ १०४ ॥ न न द रु व व क व र यी वा डं वज काल ॥ १०५ ॥ लान रा के दं मि री य र य ग्ना वा म मा मि ॥ १०६ ॥ रु द यं रु वा दा कि व रु म् श्री म् लाल य न स ॥
 व वि द्वा न् रु द्वा न ध ना वजा न व न म् डा सा ॥ १०७ ॥ रु न न वि द्वा रु ना दि वं क यो ग्ना डं वजा ॥ १०८ ॥ न रु न द रु न यं व म थं ड ले नं रु द रु नि रु ॥
 म् या क न वज वजां रु द रु म् श्री रु ना यं वजा न व म् डा ॥ १०९ ॥ रु द नू वज म् री व व म् री वि द्वा दि नि नि ॥ ११० ॥ म् डा य का या स र व व रु य ग्ना वज वज वजा रु द रु

दयंयसायसमश्चयय॥ वजननी मदायसा विगवजववृरुमोयनि साया म्दाववद्वयोन॥ डं वज दृष्टमरुववद्वसवोत्रसादा॥ वजननेलामदास
 दिननदुद्वववनें कयोन॥ डं डल रं डं डं
 लषधायय॥ वजरी वव मदा। सस्या व
 रं गुसदययसा विग नऊनी दयं दसाव
 निवा॥ वज म्द्वययं कयणं डं डल ववन नऊनी दयसवी म्द्वयय विवला म्दी यस्ययय॥ डं डी यमदा॥ यून वजया गनमा मवववयय॥ डं वजया

लङ्गिनि॥ वज म्दी दयन वाङ्गुही कयोन॥ वजया गमदा॥ वजयना काया ययिमायां दिनि स्ययय॥ डं वजनी कायनमिनी वठिनि॥ वजव वं गुस
 सखययक मवी कृत्वा गममानामा विदा वि
 नारु गं डीः दिनि वव॥ वजका विवठमठि
 य॥ डं वजा गित्वल वठमठिनि॥ वज म्दी
 या॥ डं वज क मोनि॥ यून वय क वयकारं वजया कारं डं डं नि॥ वज म्द्वययं वद्व वाङ्ग वजसमा आय कानि शं क ग वधि गा गित्वा का विज या ना मगडं

याभिः सर्वे नथागं कृत्वा माभिः ॥ जान्मलुनं यथि आयुनि द्याया वडां जलि हदि दृष्टा सर्वयायं युनि दणयम् ॥ स मवा दवं रुमां दणमदि क्सर्वे वद्धवाधि		
सत्वाः सर्वे नथागं कृत्वा माभिः यज्ञकर्म कला	यस्मिन्नाद्य सर्वे मदा मकु विद्या दवना म्द	ममुकना मादणमदि क्सर्वे वद्धवाधि सत्वा
नायुवनं सर्वे नथागं कृत्वा माभिः यज्ञकर्म	कला वास्मिन्नां सर्वे मदा मकु विद्या दव	नानां वयुवनः सर्वे याययनि दणयामि वि
स्मरं दणस्य देहः ॥ श्री गी नानागं यत्तु	आनां सर्वे वद्धवाधिसत्त्वयत्तु वद्धायय	वका संश्रानानां संश्रानियत्रानां सर्वे
सत्त्वानिका यानां सर्वे यथा मनमादयामि ॥ दणमदि क्सर्वे वद्धानां रुगवगवयवलिं न धर्मवजान स्वया धर्मवका यवलिं नाया दणमदि क्सर्वे वद्धा		

गववधस्य विनिर्वाणकामानां याव ॥	॥ अयविनिर्वाणय ॥	॥ गनः युष्मदा वल्लिवव ॥	॥ दें सर्वे विस्वयूय युजामद्य समुदयूनधसमय ॥
यहै ॥ मिमिष्यमदा वल्लिवव ॥ दें सर्वे वि	द्वययूजामद्य समुदयूनधसमयहै ॥ मि		मिदीयाशमकु दें सर्वे विदना कायूजामद्य
समुदयूनधसमयहै ॥ मिमिष्यमदा व	ल्लिववद ॥ दें सर्वे विग्गयूजामद्य स		मुदयूनधसमयहै ॥ मिमिसंयूगां जलिव
देववद ॥ दें सर्वे विग्वाधंगवलाका वयु	जामद्य समुदयूनधसमयहै ॥ मिमिसं		यूगां जलिवमदा वद्धा ॥ दें सर्वे विग्वास्य ला
सारविडी गी सोत्थान् रुवयूजामद्य समुदयूनधसमयहै ॥ मिमिसंयूगां जलिव देववद ॥ दें सर्वे विग्गयूजामद्य समुदयूनधसमयहै ॥ मिमि			

तनः संसारदः स्वमनस्य त्वत्तु सत्त्वस्य मूढा वद्धा कर्त्तव्यं न सर्वं सत्त्वकरणा यथाधिविरु मत्यादयः ॥ अनीना नावनाया मूका भावनाया ॥ अना
 त्वनैकेनाद्या सनाय मया विनिर्वृताया विनिर्वृता ॥ वायवाय सर्वो वसनाधनाः संसारसमूहः ॥ दानरुवनायव ॥ ३८ ॥ सर्वविद्वज्जुतामयसः
 मूढस्य रक्षसमयहं मिनि ॥ नानाभाषायाः ॥ मूढा वद्धे वदन् ॥ सर्वसत्त्वा सत्त्वा ॥ सद्यः ॥ कर्त्तव्यं समवागना रुवन्तु ॥ ३९ ॥ दृष्टाभाषाया विनिर्वृता ॥ २२
 द्विसर्वसंयतु यथा ॥ सर्वविद्वज्जुतामयसः ॥ नयालमिनायुतामयसमूहस्य रक्षसमय
 सर्वोक्तं लयाय वा कानात्कमा कविगन रुवन्तु ॥ सर्वोक्तं लयाय वा कानात्कमा कविगन रुवन्तु ॥ ४० ॥ सर्वविद्वज्जुतामयसः ॥
 सर्वोक्तं लयाय वा कानात्कमा कविगन रुवन्तु ॥ सर्वोक्तं लयाय वा कानात्कमा कविगन रुवन्तु ॥ ४१ ॥ सर्वविद्वज्जुतामयसः ॥

जामघसमूहस्य रक्षसमयहं मिनि ॥ गीता वद्धे वदन् ॥ सर्वसत्त्वा ॥ सर्वलक्षणं नृजानसमलं कृत्वा शास्त्रवद्धा यवसा वत्त्वानि ससमायावेरय ॥
 गियन्नदय नयाना किला मागशी रक्षसः ॥ काकि काय ॥ ४२ ॥ सर्वविद्वज्जुतामयसः ॥ ववाधका कियालमिनायुतामयसमूहस्य
 लनसमयहं मिनि ॥ नृत्वाया मूढा वद्धा व
 वीर्याक ॥ ४३ ॥ सर्वविद्वज्जुतामयसः ॥ वदन् ॥ सर्वसत्त्वा वा विमत्ता वयोसिय
 वदन् ॥ सर्वसत्त्वा सर्वे ॥ यत्क सविद्यना रुवन्तु ॥ सर्वधर्मा निविमा कसमाधिसमायत्या कि हविद्या वसिना संयना ॥ ४४ ॥ सर्वविद्वज्जुतामयसः ॥

आनयावमिनायूजामद्यसमदसूत्रधसमयहंमिति॥धयमदोवेदेवेदद॥सर्वसत्तासर्वताकाकरयहृहृनासमविनारुवकुषावदुयनिसोदियाका
 शसर्वभाशुभिल्यहृनकलागुनगुक्कविहं॥धिसूक्तवर्गिनःसर्वकृष्णयावल्लव॥समददनरूनयाका॥४॥सर्वविदनरून
 कृष्णद्वदनमहायहृयावमिनायूजामद्यः॥समदसूत्रधसमयहंमिति॥दीयमद॥वेदेवेदद॥सर्वसत्ताःसर्वयायावियना॥२३
 रुवकु॥४॥सर्वविदसर्वयायावियना॥२३
 वदेवमद॥सर्वतथागतसत्ताःसर्वहृनविगनारुवकु॥४॥सर्वयायावियना॥२३
 वदेवमद॥सर्वतथागतसत्ताःसर्वहृनविगनारुवकु॥४॥सर्वयायावियना॥२३

हंमिति॥दलसदिहृनल्यसर्वतथागतयादसूत्रगतमात्मानमधिमुक्ताययविययार्थ॥४॥सर्वविद्वानियोगनयूजामद्यसमदसूत्रधः॥
 समयहंमिति॥असमावल्लयादि॥सर्व
 वधसमयहंमिति॥सर्ववाधिसर्वआका
 वधसमयहंमिति॥असमावल्लयादि॥सर्व
 जामद्यसमदसूत्रधसमयहंमिति॥वर्वावेगानेयकारयूजायासर्वतथागतसंयुक्तमानैरियोगयासि॥आत्मानं सर्ववद्ववाधिसत्त्वस्थानियोगयासि॥

सर्वदा सर्वकारं यमिदं कुरु मां सदा कारुणिकानां सदा समदसिद्धिं न ह्ययं दृष्टुं न वृत्तं कुरु न मरं सर्वसाधारणं कर्तव्यं न न कुरु न मलं न सर्वमत्वात्
 सर्वलोकिकलाकारुव विधिरु विग नारुव मु॥ सर्वलोकिकलाकारुव संयुक्तिं समं वागारुव नु सदेवमत्वन सदेवसावन
 यानवृद्धारुव नु नारु मां नु नि॥ अननय हं कुरु न कर्मसा रुव यू वृद्धान विरुष ताकदगधमे सधर्मकुरु नादिनाय मावय २४
 सत्वाद्ः त्वयि उति नाभिनि॥ अनुरु मायं सं मां कुरु क्षीय विष्णु माय सत्वं दृष्टीया शुद्ध्यादया मिय वमं ववयाधि विरुवै॥
 यथा वि य द्वा नाथाः संवा लो कुरु न निधया॥ उ विष्णु सिरि सिद्धा कुरु कुरु लं धर्म संश्रुं॥ सत्वाथ क्रिया धिनं कुरु यमिदं कुरु मां दृष्टुं न वृत्तं न वृद्धधर्म कुरु संयुक्तं

विरक्तगमनं कुरु वं मज्जाया लघुद्वीया मि सत्वं वद्वत्वा वं वद्वत्वा कुरु मदा कुरु यमिदं कुरु मि रत्न गणा मावा र्य वृद्धीया मि सदा वद्वत्वा वावय वद्वत्वा न
 यदा स्मामि वृद्धत्वा नुदिनादिना॥ मदा वद्वत्वा कुरु धारा समयं वमना वम सधर्मयने दृष्टा मि वा कुरु कुरु क्रिया निजं॥ मदा यम कुरु
 लघुद्ध मदा वाधि समुद्र वरं सत्वं सर्वं युक्तं यमिदं कुरु मि रत्न गणा यदा कर्म यथा गुरु मदा कर्म कुरु वा वया शुद्ध्यादया
 मिय वमं वाधि विरु मनु कुरु वं॥ कुरु नं सर्वं सत्वाथ कार वद्वत्वा॥ अनीर्ण कार यि यामि अमृता ना वया मां नु अनाखला सा सायि
 यामि सत्वा कुरु ययि त्वा मिने वृत्ता विधि॥ कुरु न॥ आकाश द गुरु मलु लं युक्त मा नं विवेक्या द वा नागा सनाय दारा वद्वत्वा मदा वगाः कुरु नाय नायि नाय

मातृप्रधाविनी। वामगर्जनी उत्सृज्य दक्षिणनयसालयशादयाहस्रनयमित्यहं कालेन प्रवरयन्। कर्ममृदाविधियन् नवसंवद्धतायिनः। वरुणं ध्या यथा। यनधनमदासयकाशिशोभुमात्तावत् ५ कृषवध्वनकानि स्यामहाकृषी। वाङ्मयदि यवध्वनयथानुकूलकर्म॥ वरुणमूर्ध्नि दयं ॥ वाममुखिकाटिनासु दक्षिणवाङ्मयागनः। गर्जनीमध्यामात्सृज्य कालेन प्रवरयन्। अमाद्यदर्शनस्य॥ वरुणमूर्ध्नि दयवद्धा गर्जनी संयुमात्तयन् सदा	मृदावामनृत्तनः। यविकेनागावरुमः कनागास्यां यृष्टयावनायोऽयन्। अथा वद्धा। अन्नायममीवयन्। गर्जनीमध्यामः	द्वियथा। यनदयादयथुथा। अगर्जना नसंयवकासि। वाधिसत्त्वा मदात्मनां कर्ममृदा २७ कयां यृष्टया कालेन प्रवरयन्। अमेवयन् सदा
--	--	--

नां कण्ठसंधाय सूर्वाया यंज हस्यवा। वाममुखिकाटिनासु दक्षिणदधुमाहं कालेन प्रवरयन्। वसुधैव कुटुम्बकम्। कर्ममृदाविधियन् नवसंवद्धतायिनः। वरुणं ध्या स्वरमाहं निधाय दक्षिणरुक्मवद्धमि दिधार्य दक्षिणदधुमाहं कालेन प्रवरयन्। वाममुखिकाटिनासु दक्षिणदधुमाहं कालेन प्रवरयन्। अमाद्यदर्शनस्य॥ वरुणमूर्ध्नि दयवद्धा गर्जनी संयुमात्तयन् सदा	नस्य मृदया॥ वाममुखिकाटिनासु दक्षि यवद्ध दक्षिणरुक्मवद्धमि मृदय रुक्म॥ वाममुखिकाटिनासु दक्षि	वसुधैव कुटुम्बकम्। कर्ममृदाविधियन् नवसंवद्धतायिनः। वरुणं ध्या नावाकालेन प्रवरयन्। अमेवयन् सदा वसुधैव कुटुम्बकम्। कर्ममृदाविधियन् नवसंवद्धतायिनः। वरुणं ध्या
---	--	--

धर्मसर्वदुर्गतिं नमस्कृत्याहीयधर्मकारुण्यकावतः सर्वसत्त्वहितार्थाय आत्मतत्त्वयुद्धमकथानमस्कृत्याहीयाय समगलतत्त्वरावनेऽर्थे धारुकास्मिन् सर्व
 मारिष्यकयुदायकानमस्कृत्याहीयस्वरा
 नमस्कृत्याहीयधर्मकारुण्यकावतः सर्वसत्त्वहितार्थाय आत्मतत्त्वयुद्धमकथानमस्कृत्याहीयाय समगलतत्त्वरावनेऽर्थे धारुकास्मिन् सर्व
 मारिष्यकयुदायकानमस्कृत्याहीयस्वरा
 नमस्कृत्याहीयधर्मकारुण्यकावतः सर्वसत्त्वहितार्थाय आत्मतत्त्वयुद्धमकथानमस्कृत्याहीयाय समगलतत्त्वरावनेऽर्थे धारुकास्मिन् सर्व
 मारिष्यकयुदायकानमस्कृत्याहीयस्वरा

श्रीगान्ध्यामालादद्यावदुत्थयत्तद्व्यापीयायुष्याय राधादवीनमस्तु ॥ द्वावमश्वास्तितावश्वाश्चक्रधयावत्पृष्ठकश्चक्रद्वानरायनिर्जगं द्वालयालनमास्तु ॥
 ॥ वादिकादोस्तिर्गं यवक्त्वाविद्वानयागनः ॥ ५ ॥ यदिगादोदगास्तितावद्विसत्त्वनमास्तु ॥ ॥ वावक्रद्वान्दवद्वादेः लोकयालवदुर्दिर्गं ॥
 ॥ आग्निनादसवायुश्चरुताधियगिनमास्तु ॥ ६ ॥ अननकावरादनमस्तु नमस्तुलागुः ॥ ॥ वक्रद्वयध्वामकीर्णदंस्मरुं मदारुवत् ॥
 ॥ यश्चादात्मदहयुः आत्मांमधुलकम्ययत् ॥ ७ ॥ खर्वत्तवयमानावमधुलमादिद्यागनः ॥ ॥ ॥ आदियागनामस्तुमाद्विशः ॥ ॥
 ॥ नकामधुलनादगीनामस्तुवकासि ॥ ८ ॥ आकाशमखसर्वधम्मोष्मायं नृत्यं नत्वा ॥ ९ ॥ कदवादिमादनादगादिर्कवेलाकधनुं ॥ १० ॥ दगन्नागामाधिमत्ता ॥ ११ ॥

नमो गायत्री नमो यथा कृतं कावलीनेत्यत्र वज्र नवायुर्मधुलं नद्या विनेका वधमहादधि नस्या या विनेका वधक कनमधुला स्म अहं संहं निगन समन
 वरुव सं वरुव तमयं सर्व वल विरू विनेने 'य्या श ॥ डं वज्र दृष्ट्या दिना धिने सु ॥ ३ 'नस्या या विनेका वधक कनमधुला स्म अहं संहं निगन समन
 नानेय्यत्र वज्र मा विनेने सं वल कृता मा वं वरुव सं वरुव दानं वरुव का वध रू विनेने ॥ ३ 'वृक्षा लघु सर्वे दाल यने रू स धि सु रू ॥ ३
 डॉक वज्र विनेने हा नार्द्ध दान वरुव रू ॥ ३ ः सु रू समा यु कं वरुव दान मरू विनेने ॥ ३ 'य्य क्रम मधुल मरू वरुव वज्र वली या विने
 नमो गायत्री नमो यथा कृतं कावलीनेत्यत्र वज्र नवायुर्मधुलं नद्या विनेका वधमहादधि नस्या या विनेका वधक कनमधुला स्म अहं संहं निगन समन

निवृद्ध मधुलं यथा कृतं सिंहासनाय विनेने वज्र मधुल ॥ अका वादि क का वा य ॥ क वरुव दान य रू यं द वी रू नं ॥ अस्या न व समा धि स गाय त्रा वा धि विरू रू य
 न सत्वा थं रू स गाय त्र मरू वरुव रू व नि ॥ डं म न रू म दान म न य दान ॥ अ न न मरू वरुव 'अका सिंहासनाय विनेने वज्र मधुल ॥ अका सिंहासनाय विनेने वज्र मधुल
 वधना म समा धि समा य न ॥ न ना म समा धि समा य त्रा व दान रू वान् ॥ क रू म दान मरू 'मदा ना ना वज्र मा सिंहासनाय विनेने वज्र मधुल
 न य रू ॥ मदा यं व म वरुव रू सर्व रू रू वरुव नी ॥ न य थ दि द दान कः यथा य मरू वरुव 'का न मलाया विनेने वज्र मधुल ॥ अका सिंहासनाय विनेने वज्र मधुल
 नमो गायत्री नमो यथा कृतं कावलीनेत्यत्र वज्र नवायुर्मधुलं नद्या विनेका वधमहादधि नस्या या विनेका वधक कनमधुला स्म अहं संहं निगन समन

लो
दि

वदुमधुलसर्वोसामिनिन्यायन॥वडास्त्रीयमानययावद्वडावधयर्थकं तावथन्॥डंनमः सर्वदुर्गाभियविष्णधनवाजायनथागमायाइरुक्मो		
साक्षां वृद्धाय॥नद्यथा॥डंलाधनशिवेष्वा	स्वमरुसर्वकर्माववर्णाविष्णधनखादा॥	वृद्धंमकुंमडाहवन्॥अथानसंयंवकाभि
यवियाद्यायथाकमं॥डंवरुहंरुद्र॥निः	अयेमखदावर्णात्रेययश्चरासिकं समक	नादगसूदिहवरास्यसुवेरुत्तानांदःवस्याइ ३२
कंकाविद्यानि॥युनरागलनसिनांयविद्वद	दयकनगाभकनसिद्वयसामेलानियन	वृयसम्वर्ग॥अस्यनरमधुलस्यवजावयुधे
दिहयज्ञवडाववकास्त्रीयनथागनाददयादवगीयेनिविदवमार्थदणधुक्वधुयुरुथादिवांमडांरियासांस्त्रिर्गं॥वदंरसिस्त्रुनधमंतावयुर्वाकनसा		

धेसशास्त्रवर्णसंदावयावगमउरमिनिमिन्नं॥विचनिश्चकिंसंयुधुददयादवगियवगानिजीदवगायथास्त्रुनंदांकीववयुस्त्रिगा॥डंवत्ताकमागंठव्यथग्रा		
यमवद्वसुधुवत्तास्त्रीयनथागनगअवगी	यिहदयावद्वालकहोःसमलंकृगानीनं	वर्धस्वसावकुमदयंवरदास्यकुविधागक
गकिर्यंरुसर्वसत्तारियकरुगायुर्वदस्यव	मसंदावविष्णव्यनिकमधव॥डंयभाकम	की॥समलंकृग॥नमःयाधेमावसुयभायवे
वदुमधुलनसिमीकननियत्र४यभास्त्रीयन	अगनददयांनिगेगरुत्तानिविददनसा	यकाशायमरागयगाविधाध्यानमडावावस्ते
गागाडंविश्वरुमगाअडसूकन्॥डरुनवकाअरसुयभायवमधुलमयगीयेहदयावद्वविष्णस्त्रीयनथागनगहावेकवधुयुरुत्तालासडावासायंराययदा		

[illegible]

गौरी ४०० नमः कुरु मन्त्राय हृदयादस्य कुरु वत्स विद्या नयनयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु वत्स विद्या नयनयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु
 यामंदा विविधयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु वत्स विद्या नयनयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु
 यामंदा विविधयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु वत्स विद्या नयनयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु
 यामंदा विविधयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु वत्स विद्या नयनयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु
 यामंदा विविधयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु वत्स विद्या नयनयुग्मयदमधुलनाम्ना दद्यात्तु

सत्वाश्च नाश्यायकं रुम्यवस्त्रिभुवर्षं युवाकालं मृदां कृष्णधाविषावगुर्थसंवाहकमने याटनयमिदथागमः ॥ गिरिगीगमिषिदं रूयवद्वधाविषावाम		
माष्टिकाटिनासु सत्वययिदिनसिगः ॥ यथा	वादावि सत्वाश्च दक्षिणदावयमिषिगाः	॥ यथमंगश्च रुम्यवर्षागम्यवर्षाकालं
मृदयं दक्षिणं रुमं गच्छं गच्छययिनिगं ॥ या	मदरुकाटिनासु सर्वोवर्षं रूयवर्षाकालं	मीयसर्वं गमानामसर्वं कृष्णयसावकाशं ॥ ३४
टिकावर्षं युवादिवां मृदयं यथाविषावः	यामदरुकाटिनासु सत्वां नंदः रूयवर्षाकालं	यथा रूमीयगमलगाजं रुम्यवर्षाकालं
विषागमिदगीगमिषिदं रूमं सर्वोवर्षाविषागमिदगीगमिषिदं ॥ मृदयं दक्षिणं रुमं नयमसुधर्मगजं नयमसुधर्मगजं ॥ यामदरुकाटिनासु सर्वोकागधन्यवर्षावगुर्थसु		

नकं रुम्य सर्वसायाविषावकः नीवर्षं कसंकागं विषागमिषिदं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु		
गुलायममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु	दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु	यादिना ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु
आयुदानं यकादिनीयवर्षं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु	रूयवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु	मृदादक्षिणं यादिना ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु
याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु	नवकं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु	दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु
मृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु	दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु	दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु दक्षिणं रुम्यवर्षाकालं ॥ याममृष्टिकाटिनासु

अथयर्थकमरिष्यैवदद्यात्तुयन्त्रारिषकाधियनिदशयर्थकदद्यात्तुमरिषवाननकनदद्यात्तुसर्वेगथागनयूययूजामघसमदसूरवसमयद्ध॥

विरानसिद्धिरविनाशप्रमत्ता। कुर्यात्सार्थसाधनयरासमं किं निमनकथैराव विमद्वक्यात्मनां॥ न निराधर्मां कुरुयात्किं कुरुयात्॥ तुरुकनित्याकृतमपिदि

विशानसिद्धिर्वाणिशधधर्मना। कर्मकार्यसाधनयससमिनिमनमधैरावनिमद्वकृयात्मनां॥ ननिशधनांकवृक्षचालिकांयला। वऊनलिलाकववशिद्धि

दायिका॥ अग्निनामिकयुस्मायिनाकनासुगर्भं गगनचरिणं सुधर्मनामि स मया गमिद्विव ददादकुमाव ददाननासगमिनामनासदा॥ स कलायिलाक वरासिद्धे दायिका॥ सुगनामियध्वगमिका लुध्वः सुमेध्यागनादभसादेकस कवहनसादिगंदयाग्रासुयाइगाथासा समाधिगं॥ सुध्यायमायाकेलाकध्वगुमलवगाणाकध्वमह्वरवंधविनासनानि॥ वत्वाविमकाधिसूर्यादिमानि॥ यासादिमकुः॥ गिरसर्वेयगाउ	अनादृताः॥ ० ॥ सर्वेयजिदासगम् ध्वगध्वगनादिसुखलोयिकलाकारु यदकाणादिसनादिगदनाकध्वथग्या यदकाणादिसनादिगदनाकध्वथग्या	वमकायहावधमाधिसुया॥ वदवदघ वयाकवयाधुसर्वयुजाकिवेलेयिधिसुय ३१ यनाभययिलाकायिदयमदधयादगादि
---	---	---

मानेऽयकावधमागिकयुसादिगंठं ध्वनयादिउदकनकावयगायिदुववमतां॥ उंकाकानेयादिमकुधकावयगा॥ यध्वगयाडिं वत्तरेयादिम कुधकावयगासर्वगध्वनध्वं कुमायववध युवांर्यादिमकुधकावयगादकना रुसमागमिदं कुंकाकुंकां हामयकनभम् वसगादिगेनासासर्वयमिधीने॥ गिरेकध्वलवलादिसमिध्वसकुध्वयागुनायायिकुकर्मानि॥ यथायूवाकथाकुवतनसम्यग्गनकीनंयसत्वा नाकुसत्वा	यादिमकुधकावयगाकीवगादिदाडं कवगायनः मंगारगाथायकिविधुम् नसुगावगसत्वामयायमिसिद्धिर्नालाम	मृगयादिमकुधकावयगासम्यगुमं॥ उं गेध्वनं ककुं॥ ध्यादवाधुविध्वमकु यत्सगसमानः॥ यायववधगाकयल्लघुनकी
--	---	---

निहंरुडाडं सधियायविष्णुधनीरुनावलाकालिहंरुडाडं सधियायगविर्मन्नागनिहंरुडाडं नवकागयाकविनिहंरुडाडं सर्वनवकायूद्वविहंरुडाडं डंसधियायविष्णुधनीरुहंरुडाडंसधियाय सायिकानांरुनभिकसंरुहं॥अथकराव मलायकालखवजयाविमहायवभायुयुग आस्यगानिगामयगुनाभन्याविक्विषनेवयायज्ञानेअस्याविधंसयकालिखन्वावगुवसंवगुदावंदगुकावंनलाहनं॥दीवधासुसयाधस्वाठयधुप	गविगुहनविनासनिहंरुडागकामधु विनेकंसंलिखन्नासोभाकाधियदुमर्निने शरेसंलिखन्वाथकवार्कियदाकेहोनज	लसायगुयकाकवंगुमधुलयसाकवधुम खन्नागकोवाभीधंश्रुसागिनांययनवावि यास्त्रीयवामगावेऊयालिखन्॥नकावाभी
---	---	---

नभावाकसलिलखन्

यानियाःसर्वकाखयूयादयालखाभनगःगधगनादेनाखाकायमनलययवजावार्थयविष्णुगःकंवेकाभा रुगवन्नहिकावृषिकंदृथलाभन्निर्गदवाः नाकययन्नानलेवयवन्नारिर्विकाःसर्वद्वर्ग वयायनययवत्सर्वकमोषिकुर्वेकि॥सर्व वकमोषिकवाभूनकाकलाविधिनामिसर्वस खजयदामारेखवोःसर्वद्वर्गित्यामक्तिरेवनि॥अथरवायंवदधवःसंहावलाकिमनरवगियमेखेवलाकायधमादवावन्॥रुगवोयवममदालकलम	निलयमूकःखगलाकारुवरुमिद्वयदु गायनिदुगारुवनिगडाभाऊननसर्वज धकारवमि॥दवानागायदावाकसादिग	निसर्वसिद्धियाथिसिद्धाकि॥मंअक्कावाधिये लगुदादिनमादयनि॥वजयाविहंकावधस निवागिगारुगानांसर्वगमियसादिकमकोवि
--	---	--

वधवाहं मावयस्व कर्मदा ॥ वज्रवध्वन ऊनी दयवजा कावधन ऊनी वला का वं कृत्वा भवा ४ य सा का रा दया स्त्री या स्मृते वन ऊनी दयवजी कृत्य मयांगुली वद्धा ॥ वजा का नाः कृया विजया दक्षिण वरदा वाम कुलम ऊनी रुद्रां कृती सेव रेद्रा का रावः सेवा स्वामवा स्त्री या रुद्रा कृत्वा रुद्रां गाम वयु मः लाया कालां कृया कृत्वा ॥ गाम वयु मः का रा दक्षिण सेव गय सुलि गा व का सेव गय नः कृष्टि माय कृ सेव गय नः दे का य कृ सेव यो कृ ता रुद्रा सेव गय ग ना या ना सिः	नारु या द गान धा गाने ॥ वज्र वध्वन ऊनी गार्द्रा रुद्रा दयि वा सा धि मभ भ सेव मध्व स्य य य का भ म द्या ॥ सेव य मा स य म द्या सि	दयवजा का वं कृया द्रुम दा ॥ गस्या व व द के रुद्रा व वा ॥ गस्या व द्यांगुल य य रा का रा रुद्र ४९ वय मा काला य मा सेव गार्द्रा कृत्वा य ग रुद्रा भव द
--	---	--

यानां ग्रायते नास्तु टा नाम या चार य स्माय ३ दी धं क ना र्थ विनिम अथ खल रुग वा च ऊया धि सं ग क व द्या य ग रा म द्या य ध म धुल म व लो कृत्वा धु का रेः म का या स धु सा धु ग य म द्या द व य ना य यू या कां मिष्ट यः सून व सं रु वः वज्र ना म स मा वि स मा य य युष्म म द्या युष्म यु वि मि ना य युष्म रु न स ॥ ३ ॥ य स का रा मा वि ग द्या सा र्व न व क गि र्य कृ ग य गि य त्राः स त्वा सं य ज्ञा ना कि मा र्व व ला का धा यु क र ता ये ना यु व रा सा र द द ग का वं व द्द क ल कृत्वा रा सि न व स	गं य वि सान् सं ज्ञा नं ग द्या धु य गि य द्य ध मं यु या वि मि ना यः युष्म रु न स रुद्र व द न का आ रा यं व का रे धि स्था दा ॥ अरु ना स र्व ग थाः	दिश या मि ॥ अथ रु ग वां वज्र या धि स र्वो मि ना म र्व ग था ग र द द यं ख द द यं नि धा र्थ ॥ ३ ॥ युष्म ग न द द यं धा व द्या सा वि न मा रा यो स र्वो या य
--	--	---

धेनधारावहदयधमाकवायविज्ञानारुवनामथरुगवान्यनरयामिनायवजयरायविनामसमाधिसमायद्यसहोमसर्वेनथागगायवजनामहदयाधवाधिसाय नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग	नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग	नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग
---	---	---

दयानिधवावयानावतसमहावतवतसमृववतकिनलवतमावाविधुदधयसर्वयायान्कुरुद॥अस्यासायिकमागायांसर्वमाववनासानिधवाविधुदध सिगानारुवनामथरुगवान्यनरयामिनायवजयरायविनामसमाधिसमायद्यसहोमसर्वेनथागगायवजनामहदयाधवाधिसाय नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग	नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग	नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग नमोऽंमृगनरंमृगाहवमृगनसमृवमृग
---	---	---

वज्रयाणि मुमुक्षुर्धरे विष्णवे ॥ तत्रैवादि कर्मधर्ममधुललखा विष्णुनाम् ॥ अथ राजा रुगवत राजा रुगवतमहान् ॥ अमुदीययनिः ॥ श्रीमा अमुदीययनिः ॥
 वरः ॥ वज्रयाणि मुमुक्षुर्धरे विष्णवे ॥ तत्रैवादि कर्मधर्ममधुललखा विष्णुनाम् ॥ अथ राजा रुगवत राजा रुगवतमहान् ॥ अमुदीययनिः ॥ श्रीमा अमुदीययनिः ॥
 रुतययि विष्णुने स बाह्यल मधुललखा विष्णुनाम् ॥ अथ राजा रुगवत राजा रुगवतमहान् ॥ अमुदीययनिः ॥ श्रीमा अमुदीययनिः ॥
 वज्रयाणि मुमुक्षुर्धरे विष्णवे ॥ तत्रैवादि कर्मधर्ममधुललखा विष्णुनाम् ॥ अथ राजा रुगवत राजा रुगवतमहान् ॥ अमुदीययनिः ॥ श्रीमा अमुदीययनिः ॥
 यं न स सर्वथा सर्वविधिना ॥ यं न स सर्वथा सर्वविधिना ॥ यं न स सर्वथा सर्वविधिना ॥ यं न स सर्वथा सर्वविधिना ॥

वचः॥ वदुवास्तुकाश्च वदुवाच युवेष्वनाम्ना

नस्याहं वक्तुं वाक्काया वयाभिस्वयूधवै

गुणवैश्वकुमहावाङ्मयाव्यामिनृस्यं॥स

क सत्ययविदजनं स वाक्ष्यत्तमधुलं दद्यात्

स्यादं निष्ठा मः यत्र वा द्दय न स्पष्ट ॥ वाचि

मृत्युर्यंवायिदसिद्धयदवांविश्ववधक ४७

नयति नरासुखमनिकै विरुद्धाया

नमस्तु रुग्णासयसुवाधवान्॥ विदूयाद्गः

कवचसंहरिणादिदिनाशनसंकयगाय

यंगस्य सर्वथा सर्वविनिर्गन्धकामदय्याधिरुद्रादं याद्वेनिश्चयार्थम् ॥ अथ दण्डिः ॥ साक्यालारुगवक्रयनियत्येवमाह भावयममिरुगवसर्वसत्त्वदिगम

[illegible]

भट्टयभाडं दभाडं गभाडं यभास (धियां म बुत्त)

रविकामधुलंयुधिलिखमध्वनार्थमथेव

यः शिवाय तस्मादिदं शिवाय तस्मादिदं शिवाय तस्मादिदं

द्वयं। आदित्यं वनादुत्पद्यं तु द्वालयालासु स्थ

वयानगः साहय्यगः सार्वाय्यजयगः सार्वा

युक्ताः॥कनःयवगयलेयाचयेसास्त्रयस

यमुनाजगन्मूर्तिर्देवस्य कलशेश्वरदेवता

लारिगाकिगो॥ गगादद्याद्दयसाधनां॥

मदिनोविषः मिथ्या कविज्ञाना यदेषा ला

सादिगास्तेगा॥ अथ नमः साववमाह्वयः काश्चिद्गवगद्वयेथामर्द्धा रेयिदः॥ सकृद्वनयविष्णुमिरीयकमुद्रनाथाहर्द्धः॥ कलयथाकनट

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

दिनावात्सवयंरुगावत्सर्वदासर्वेश्वरकावर्षगुर्यैसांविधास्यामः॥अथयमासदावाज्जुगवकंयधस्येवमाहुः॥अहंरुगावकस्यमहावाक्यंयददा
 मि॥अस्यावावमवधानियानिवाधयामिने
 अस्यामदावाकमाधियानिब्रवमाहुः॥अ
 रुगावकस्यवाक्यंयददा
 यमयिषावक्यंनवाकमसादिकंनवाक्य
 दिवारिषामिसर्वदावकावर्षगुर्यैकवै ४९
 यामि॥अथवन्महावाजावमाहुः
 ॥अहंरुगावकस्यवाक्यःसर्वदासर्वेश्वर
 सर्वविषयंयुनियालयामि॥आलकाक्षक
 विषामि॥नागदायानिषययदामि॥विषासनेक्षनात्सुजामि॥सर्वाकारवक्त्रानिषयुनिवाधयामि॥अथवायाधियानिब्रवमाहुः॥अहमायिरुगावकंरसा
 वा ३

महासत्त्वस्य सर्वदाकयुक्तंनत्सुजामि॥नाकाववागच्छत्सुजामि॥सर्वसम्ययुक्तत्वादिवयविनिषादयामि॥सर्वरथाक्षयानिवाधयामि॥अथवावामा
 दयकवाजावकस्येवमाहुः॥अहंरुगा
 वकस्येवमाहुः॥सत्त्वस्यासागीनिरिमेदा
 नसर्वदायुनिवाधयामि॥सर्वधनश्चायसमृ
 द्विष्कवामि॥स्वजनयावेजनदणविष
 दिवकावकावामि॥आगवययवाहमयग
 कयाजिह्वावादिबर्कावामि॥अथेसा
 नःसर्वरुगाधियानिरुगावकयुक्तयकीवमा
 हुः॥अहंरुगावकस्यवाक्यंयददा
 यमयिषावक्यंनवाकमसादिकंनवाक्य
 दिवारिषामिसर्वदावकावर्षगुर्यैकवै ४९
 यामि॥अथवन्महावाजावमाहुः
 ॥अहंरुगावकस्यवाक्यःसर्वदासर्वेश्वर
 सर्वविषयंयुनियालयामि॥आलकाक्षक
 विषामि॥नागदायानिषययदामि॥विषासनेक्षनात्सुजामि॥सर्वाकारवक्त्रानिषयुनिवाधयामि॥अथवायाधियानिब्रवमाहुः॥अहमायिरुगावकंरसा
 वा ३

[illegible][illegible]

यामः॥ या कदा स्माकं नयया नू वा सुविश्रुता ॥ आदीप्त नवक क्षमाकं मम धीरूटि शानि ॥ मम न म मी नं व न स म दा स त्व स्य व का व र ण गु र्ये क वि श्या म ः म दा ।		
अव वीर्य द श्या म ः वि ये वा श्या वि ये व का वि ।	श्या मि ः का ल न का वं व र्ये यि श्या म ः स र्वे ।	सं त्वा नि नि श्या द या मि ः स र्वे व र वा श्या वि व र्ये ।
ॐ श क र वृ ष्टि मू ल्प का म ः स र्वे रु यं वि ना ण र्ये ।	श्या म ः डि ष्ठा रु या व द ध र वा रु या य नि ।	या ल यि श्या म ः ॥ अ थ सा ध नं स र्व नि ॥ कं का कं ७०
ल य रु या ल रु षा त्वा व रु ध रं य रुं णी मा स मा ले ।	नं दि श्या वि श्या या व र्णि नं ॥ म मा वि य मृ दः ।	ध्या त्वा कं का व म धु लं ता मि मा ला कु लं दि यं कं ।
का रं न र वि श्वा व ः आ क र्ये य कं कृ द षि न या षा कृ मि ना का वि षा ।	कं का व वा न स म यं ना वि य स म रु न नु श्चि मा स मं ।	न नः स र्वे क र्मा णि क र्मि ना वि य क ल ग ना दि कं ।

म स्यो र्धे ह य र्ग स र्वो र्धे य नः रु ल ष म द या ष्णि ॥	० ॥ अ थ स दा र्धे व वा स दा द वा वि य नि र द्या रि म दा मा रु का रि श्य वि रु नि रु या व क य नि य स्ये व मा रु ॥ म ।	
रु या मा रु का रु या रु ग व न् स र्वे द व ना गाः ।	द यः सं रु धा मृ ष्टा म खी रु त्वा नि वा नानः ।	स र्व ष नः य नि रु म र्के रु ने यं दि ना र्था य द ।
द यं य दा श्या मि ः आ ग नः सा ध रु ग वा न धि नि ।	स रु णा सा ध सा ध म दा र्धे व व मू र्धे व व रा य ।	स र्व द द यं दि यं मा रु का नां य स र्वे स ः अ थ म ।
दा र्धे व व मू र्धे व व न द न व ने व मा रु ॥ उं र्धे व री ।	ः रीः श्या दा । उं र्धे व सा दा । उं र्धे व रीः श्या दा । उं र्धे व ।	ः र्धे व सा दा । उं र्धे व रीः श्या दा । उं र्धे व रीः श्या दा । उं र्धे व ।
श्या दा । उं र्धे व रीः श्या दा । उं र्धे व रीः श्या दा ॥ ७० ॥ अ थ न रु ग व न द्यो र्धे व वा षा स म रु का वा ॥ अ थ न यं म धु लं रु य नि ॥ अ धा व व कं ले श्या म ध्या नि व ण य न् । व रु या णि म दा वा ।		

धंरुलाकावेयावदं। नस्यवादनतकुर्वतेवयानंमदाधियं॥लित्वित्वातेवमीमकलित्खदनाथासखं। आलम। अस्मद्वयलित्खरेवमममकां॥माहुरेयसमायु
 कं नत्वादास्यकाधमानमं। दालदालनत्वेव
 ७ यूर्ध्वयामशयासवलिद्विअंरधिवयूर्ध्वसंजनं
 वध्नाजिष्ठाहिलाकविजयायराअलिधिवत्क
 कामननवरं। यूर्ध्वकृत्वायथायायं। जयालक्षवदुष्टयं॥नकोनादंयष्टयमरोवयस्यमदाजनः॥नेतावयाययदत्तयालनसवलिना॥ननायणागिमंवेदितेव
 दालित्खदालिमकाधिनं॥ननावाकुरुसादे
 कयालमधुवधुवः। अष्टोकावधमविगां
 यालनकलणनयिनामप्राकिविगे॥ननःक
 रिःयुकायित्वाकयालयारधिवयूर्ध्वमावधिव
 अविरेधयिष्टयंयनइस्यमधुनं॥ननःय
 मोषेदयान्॥माहकायदवकलिंमायाहिला

वंदस्मानमं। माहकागणसंयूर्ध्वममरिरेववातुनं॥संदृष्टानेरुयाकृत्वादयात्मानसंयुनिगं। कयालयवासवयूर्ध्व
 रिववादस्यानकाअय्याकिमिद्विगेनदयाद
 कंवायियस्ययवाकसं। वसिष्टावववकवलिद्वं
 ॥यत्थैष्टान्नमसिद्धिंयाथयत्॥कृत्वागि
 यवत्रमस्यवमाह॥वयमयिरुमवकाहयाखकलासावयामायमंरुगवान्कं। याम्यादायधिमिष्टुत्तमयवमाहयादवाःसद्वदयं। रायन॥अर्द्धकं। उधिवडंनुअ
 द्मानमा॥वसवसायनंदवांयमवकांयिष्टु
 पनेलाकाधियकिमास्काहमियदानंवे
 नाम्खीदत्ताविधिदसंयाकिरिःगंमालव
 विगां। अर्गमययागावनाअक्षीयंवरुष्टयं॥न
 किंकावत्तयायिष्टयगमनमाहवानांवावदावे
 नद्वमदिवि॥ ॐ ॥अथवमाहयादवाः

ॐ कः ॐ गः ॐ रः ॐ कः ॥ अथ नयं मधुलं कवनि मधुलं यदेव कलियेन ॥ स खो निलाकमंगलं ॥ न स्यात्तु नालिखदीव मिथेव सवयादिनां ॥ यष्टनाविलेखदः	खमदाकवविदिनां ॥ दालयालनस्थेवदसं	यामयासमधुलकलधायूर्ध्वं कुरुं शस्यययः
ॐ कः ॐ गः ॐ रः ॐ कः ॥ अथ नयं मधुलं कवनि मधुलं यदेव कलियेन ॥ स खो निलाकमंगलं ॥ न स्यात्तु नालिखदीव मिथेव सवयादिनां ॥ यष्टनाविलेखदः	यविश्वनादवा नाकयिर्गविवदधः ॥ कः ॐ	वृदाः सजाः सर्वयनिगधं यं नारुमः ॥ मधु ७२
ॐ कः ॐ गः ॐ रः ॐ कः ॥ अथ नयं मधुलं कवनि मधुलं यदेव कलियेन ॥ स खो निलाकमंगलं ॥ न स्यात्तु नालिखदीव मिथेव सवयादिनां ॥ यष्टनाविलेखदः	मिथ्यामययावदधवयाः ॥ ॐ यीष्टमदा	सदावदधवास्तुयाः ॥ ॐ ददददाः ॥ ययाचक
ॐ कः ॐ गः ॐ रः ॐ कः ॥ अथ नयं मधुलं कवनि मधुलं यदेव कलियेन ॥ स खो निलाकमंगलं ॥ न स्यात्तु नालिखदीव मिथेव सवयादिनां ॥ यष्टनाविलेखदः	ययथावदधवयाः ॥ नयः सिधिरा यनवालायाः सिधिराः ॥ नयः सर्वयदया लंदवानाकुर्याथास्येन ॥ लकमकां दितकदा कृत्वा संपादयार्थे	

नैसाधिनं साधककथां मिथ्यादि सदाकर्म ॥ वकारिणादियुष्टनमथवावदयालिने ॥ गुरुकथागवायि सदा कुरुववेत्यका ॥ साधयसाधककथां नित्यं सर्वदवाचथा	वै ॥ ॐ शिमतयां कौटिस्तदास्यामयधमं	खंवदरुदः ॐ निवेत्ययनदास्यामववै ॥ न
वदामे ॐ कुरुवागनीनगादवागवावदयनथ	यनैदिशमकुधनं कुरुगमं ॥ गुरुविकावाक	दवाधियावयत्तनेविधामिनि ॥ अथमदधवा
नायावाकमकुरुववसिद्धिदुदवगवसां वसा	कि कलाकारं नमधुलयाविनादिनयां मरुं	रुगवन्सर्वदवासवाववधानि विष्णुध्यामि
दयारुगवकं यधियत्तमादधायनरुगवाला		
स्वर्गमा ॐ कुरुदग्यामिः ॥ सगानिमा ॐ कुरुदग्यामः ॥ निसारमार्गे ॐ कुरुदग्यामः ॥ निवर्णमार्गे ॐ कुरुदग्यामः ॥ वृद्धवं वदग्यामः ॥ अयायमार्गे ॐ कुरुदग्यामः ॥ सुधर्ममार्गे ॥		

या मातया दद्यात् किं च यत् ॥ उं सर्वे नथा गता रिचि श्वर कथं गच्छयन्ते ॥ उं वज्रवज्रा रिचि श्वर ॥ उं वज्रवज्रा रिचि श्वर ॥ उं वज्रवज्रा रिचि श्वर ॥	यदि त्याग्यं धि विरुद्धं स मुखाया निन श्वरं	सधा त्याग्यं मुद केने वज्रा द व ॥ मुखाने वज्रा द
यिष्वा रिचि श्वर ॥ उं वं ॥ नरः समयं विव क न	श्रुयान्त लघा यत् ॥ अनायार्थान् गृहीयात्वा	ममाचार्य यर्जिनः सर्व सर्व सुदानानि द व ॥ ५७
य क ना वलं रु स्य व श्रियां गुर्वनिज्ञानं संवा यति	या धि विरुद्धं रानि मात्त द व ना द्या यं मुदा क	लं विरुद्धं ॥ लोकि कलाकारे नं वा यि य द्या क्शयिन
नां श्वर ये द रा व नः ॥ निद द दि मा हा त्या यि य नः		
या क म ग ॥ व त ग या दि व द्वा नं ॥ मु द नं व द्वा सा मन ॥ गु र्निज्ञ य रा य त्रा घा टा य वि व द्वा ॥ अ श्व मि दां या य र वा स त्वा दा द व गं सु दा ॥ द व न कृ य धा म कि म कृ ण स दि यान्		

रिक्त य नाथं व संशु क द य स त्व वृ द्ः वि क ॥ गु र्नु कानि मि रू क र धा म म य सा धि नं ॥ म गु ला थं ह या ना थं म गु लं वा यि वि कि मं ॥ स मा र्थे ना दि ना थं य यु क्ता थं य कि नो व सां ॥ व द	वा क्श या वं या धि व स र्वे रा शा रा व ना थ य वृ	द्वानां समय या व ना य व ॥ अ व य त्य र दा वा रु सा
सा य रा य न मृ या स त्व दि न र नः ॥ स म र्थं गु र द	स व य द र्शे नः ॥ मि श्र क ने व द्वा न किं य न	ः कृ य यां वि क व्वा नि ॥ न वा श रि य वं द द्या क ॥ उं
ध ना य म क वि र ॥ स वा कृ म स र्वे रु का किं व क	॥ उं व द्वा नि वृ द्ः ॥ अ न न व द्वा द र्श द त्वा क	मा रि य वं द द्या क ॥ उं स र्वे र्मा धि कृ वृ द्वा नो
स र्वे न था ग क रू क दा श्वा मि गृ ह्ण व क स मि द्वा य		
॥ उं स न वा गु र्गो व व क न दान व रु रु म र्म द वं ध न धा न श्वा स नं या न म व वा ॥ य व रू क य र्वे व वा धा म ष्ट य म व वा य न द्वा दि न क र वं ॥ सा ला रा गि नी यि नी		

शस्रौगुनादयंदिनासयंननःसिद्ध्याध्वनांवाधिसाधिकां।म्याधायियथास्मिन्लोविकानिमहर्द्धिकानिनिगानायादिकार्थसिद्धेयुगयमकुविना।	विषयविरुद्धदवगावायामकोममनविक	नशब्दयामाधयववसानिःखरावकुधमोर्षी	रावयिद्वारुवकसारंआयातकुमधुलाचिह्नम
स्यमधुखयोजकं।आतासमयमजकुविहययै	कमदवामाजवयविरुद्धदवगावायाम	मानमृत्यायंसाधयवविरुद्धदवगावायाम	गनननाधिसावममडांखदीजनकुमदया
गुरुविषयवृद्धमु यथावदनुयुधसधननाधिस	मानमृत्यायंसाधयवविरुद्धदवगावायाम	मानमृत्यायंसाधयवविरुद्धदवगावायाम	गनननाधिसावममडांखदीजनकुमदया
यधिययवृद्धादयामहादववमादुःखिंरगवकसा	मानमृत्यायंसाधयवविरुद्धदवगावायाम	मानमृत्यायंसाधयवविरुद्धदवगावायाम	गनननाधिसावममडांखदीजनकुमदया

स्याममधुलरुद्धयविस्मयवियायंरुवकिरुगावाजाद।साधुसाधुवृद्धादयादवगलजममदकमानंनथागानांमद्वानांदिनाययवियुमवकळ्णि।	मधुलनाकयविस्मयवियायंरुवकिरुगावाजाद।	लिखायिकमवदिनसायूडिनसादुलवियं	वाधिसिद्धंमयिदवयुःसंक्षयःना
साहासिकोनानृसंसावंदयनसंयुधसआव	कनमनकननरादमुगुधिरुक्तासंख्यामये	रुगवोत्रायवृद्धवशायदवमधुलंयवि	गलमयियमायिनकमक।यावकाद्वेनथा
गानानामवियुधसाध्वनकमनरुकिंसाधियं	रुगवोत्रायवृद्धवशायदवमधुलंयवि	सानंरुलवियायामिनि।दुल्लामावयरगवा	सानंरुलवियायामिनि।दुल्लामावयरगवा
मृत्नाहामासववृद्धवमधुलादियवर्णांमृत्नाहामासववृद्धवमधुलादियवर्णां	मृत्नाहामासववृद्धवमधुलादियवर्णां	मृत्नाहामासववृद्धवमधुलादियवर्णां	मृत्नाहामासववृद्धवमधुलादियवर्णां

दुययत्रावाक्यो कथं वयं रुमवयुनियस्यामभनयो तादवयुक्कलेदमलुलुयवगधं यदधवाशिथिक्कधं राधर्मनाकवंदयविजयध्वं नननसत्वादिवोयुक्कावरा
 वाने॥युष्माविदनाःयुष्मावन्कासवनि॥मयायां
 नैविमकासवाके॥यवायायाययनास्वयां
 वशास्वयाशिथमंकुनसाखदवनाकार्यानिव
 कं कृन्मसु कगसुयानियनयुक्कनाम
 धुनयवभाशिथकोविमुगमयायाववभासा
 ननायेमयानायेदवयुगाइयधिंहेलकने
 र्थकाविष्मायिविमुगदसाकंयूनःस्वत्ययायकाविष्मन्निअहसुमावंदवयुगावकुर्वेदहसंवाभाकेवोक्कुंलुक्कलादीनां कृष्टमधमकानात्मावेकसर्वयाधभन

७

७

सद्धमंइइरुयागु॥सद्योयायविमुगानि॥ननःमाआस्थिकसुसमादिकंवाभनेवविकननइइयागु॥सद्योयाद्विमुगानि॥नत्यधालिवावकमद्यावसुगकातिनं॥समका
 लिखवकुञ्जगृहीकोभिमाणूकं॥विधवदंनन
 क्योर्॥वकुबलंवृजंगवं॥वभानानाविधि
 मुदावाकनालिखान्॥यदनइउविज्ञानेनथ
 लाकरुत्यनयि॥यदयानेमाकुनाथसंनय
 यसकावागुसगयित्वासमासनसंलिख
 यथाविधि॥स्वगांववधिवारुतावृद्धयुयिदे
 सिद्धाहामथद्वदसकानःयायाववसमाकयशाचुनकीवसमादिकोरायसर्वयादिसुकेअस्थिमाआदिकंगराप्रथयानामसाखेकोविनि॥उत्यानागगनाका

[illegible][illegible]

आयुगुह्यादिप्रियादिभिरासाविकर्मिकमकुलः ॥ ओमेनमः कनाजयन् ॥ धाकयद्यादिभिरनेव ध्यननध्वयय ॥ अरिषकायकलं सर्ववाक्तादिसंयुक्तं ॥ स्कायं कायः ॥		
मानोभेष्या विद्यासक्तिरिमक्तिर्गन्धविद्यास	यद्विधिवदत्तायं गन्धविद्यासक्तिसमानेयं	निनिद्रियाध्वयनमाधियासयन् ॥ असाहनिवि
५३ ॥ अकं रस्यसमाक्रान्तिरयद्वधभनारिष्यकं	क्रान्तिरयन् ॥ अकनमधुलं ॥ विद्यानाकुसं	गानां अक्षत्या ठरुयामखं ॥ यदवाद्याननाद ॥ ३२
याद्यासिनानां यथाकमेवाद्यादयं याद्यादिः ॥	ख्यादिवादिभिराक्रान्तिरयत्तययमत्वादिव	क्रियायश्चनयाधका ॥ मयाकृद्विकदकनाः
स्ययननाश्रितमखं यदा ॥ स्यात्तस्यारुमासिद्धियस्य वायुमत्कारवन् ॥ वायुयाननथासिद्धिमध्यामायविकीर्तिना ॥ अट्टदमखनमियेक विद्यासिद्धिकुलायोको ॥		

॥ दकवास्तव्येयं कथं विद्यादत्तामखं ॥ तथा यादनालसिद्धिस्तद्वास्यानुसंमयः ॥ विद्याधनयस्सुखानमासिमासाकुयुधेव ॥ साधेवर्मेकमकुलदयासं		
वादकांगुर्भावेकिकस्यकुपीनायदयाद्व	ककयं ॥ नकेवपीत्वायुत्तययानयद्विगं	वरन् ॥ नमः युजायनः ॥ कृत्वाध्वयमृष्टिययाधे
॥ अथाययन्मामिमारुकिमाद्ययदवगाना ॥	पूर्वमासकुयस्यानमधुलं ॥ रवन् ॥ ननाकुका	मयावानदवगानानिमदनं ॥ रवावकमयाना
विद्याराजं नमायुवराखदं ॥ लेखिकुमिष्टुमिम्	धुलं ॥ कव ॥ अत्माकां ॥ विद्यानामनुकयायय ॥	कंयुजनायय ॥ नमरकधमरगवयसादकधे
मरुसि ॥ ममवा रुवकुमां वृद्धा लावायालक्यालयभा ॥ अर्द्धकवाधिसत्वाययय ॥ नमर्द्धका ॥ सासुनारिवगमत्वाध्वयकाविदेवावहया ॥ अदासमुकानामाकुयु		

मकमधुलेशुतं। यारुनकुवाविद्यामयथग	क्यायवारनंम्नयंयामयायसनिषाकुमधुलंसादिताःसर्वसानिश्चंकरुमहथमवमककुयावायानमस्तुत्वारु
गवगःस्काशायदावंकुत्वारुनःक्यादिम	ऊनं॥विमयंयनियुक्ताभिध्यायानाधर्मः
युगुगाराकृष्णालयायाविनानवायायायानादकं	अकृष्णामयिद्याममियासकायासिद्धिदुभा
कृष्णगवयुगारायांनवासायांयुद्धनखप्रदशनं	यत्नादिननिविशिकाःशुतंवायदिवाशुतं
नयसमयंयुक्तमववैजिनसादिनं॥सर्वक्यागुगाराकृष्णालयायाविनानवायायानादकं	शुक्तंयाममियानकायासिद्धिमिदुभा॥नमसमयमात्मागौनिस्त्रिदिक

युसादनदादिधानिनिवगयुद्धादिरुद्धेवकादावन। सत्त्वानांमदिनंनवायंययंरत्नक्यायवायाविधिरुद्धमदागुक्तदवास्तेवव। गूलंघुगुगाराकृष्णालयायंम		
लंघयन्। नलंयवनिर्गोलाकृष्णालयायानाकृष्णमदा	कावान्धेववनिदयमकुदवनांशुद्धकमी	विनयानिकाक्षननिदयमंययकाविमवाकावि
विकित्वा नवाया॥शास्त्रनकुवदादिसुमथव	॥दृष्टद्वयायुनिरुययथावसवेदिदानेय	कागकृष्णशुक्तिः॥समजोदधनादधाराकेकेवेय
थिदुं॥नवावजघण्डरुद्धदाक्या॥नमश्चका	निसफवत्तानिगुदीत्वासायधवावकुवकेव	यासयजायकृष्णनायवशिष्यवयकृष्णमकुक्षध
यिरुकासायांविद्यायाहंसावयन्। नरः॥द्वयाजिदसायधमयाविद्यामानयवांशुद्धयं॥वत्तानिधानविदीदिवधुसुवधुवादानगुद्धनगुद्धासनदानकादाविवायु		

वृक्षिथादया॥गामनगरानेवयथास्थितानिखविलुप्यसादनदक्षिणानिनेवजयन्॥आयसिद्धिगुर्वरुक्षिकामानवायिनेवदयन्॥देवदत्तमानिज्वलवर्षानिया वलाकवाकससूतवृद्धव्यायाका॥केयनदव साहस्यिसाहस्यगिननिदयन्॥दुयनाहव ययवावैव॥वमनिसर्वविस्वायिगां॥सिद्धिम म्प्राप्त्ययमसाधनविधिमतयनः॥यनदंरवावकसर्वविदेर्दंरुत्थेवैलेखन्॥दक्षिणसर्वदृग्गिनियविस्वाधनंवाहंरथागवामगाकासूर्नि॥सर्वदृग्गिनिय	मुखं सर्ववृद्धसमस्तुर्वसर्वकार्यनिदयार्थि कार्यन्तत्तजायकाविस्मानक्षमस्तुर्वनि प्रागिसर्वसत्त्वान्वांये॥सिद्धियागानेमेधं	त्यदः॥व्यायविनि॥आयार्थनिदयन्॥वक द्वाद्वासमयाकिष्वाभिनायिकेधेवयवैव ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
--	---	--

विस्वाधनवाकस्याधकादयावलायिकवर्षवृद्धवृद्धयमयाविं॥गामन॥धकादजायाविं॥गाममेधेयवकाजंनीववर्षमयानदस्मनदरीनकीरुत्तंवाल यकमयत्तेनैववदंकावयन्॥दयंशोवनेला लायासेनीगावाः॥विक्रकवालेखन्॥वासा रुधियदीयगवमालानेवयय्यरुत्तानेनान म्प्राप्त्ययमसाधनविधिमतयनः॥यनदंरवावकसर्वविदेर्दंरुत्थेवैलेखन्॥दक्षिणसर्वदृग्गिनियविस्वाधनंवाहंरथागवामगाकासूर्नि॥सर्वदृग्गिनिय	आधिक्योवददमनगत्योखदवकारि मध्वस्त्रंयुक्तवर्णीमवावमसाधकलभाधि यकाराणिवालेखन्॥धकासाधकमेश	म्प्राप्त्ययमसाधनविधिमतयनः॥यनदंरवावकसर्वविदेर्दंरुत्थेवैलेखन्॥दक्षिणसर्वदृग्गिनियविस्वाधनंवाहंरथागवामगाकासूर्नि॥सर्वदृग्गिनिय नपुत्राविसादिनामनवाजलपूयपूयूलिख लिंकुत्वायवकलिखन्निदयन्॥गाम॥यवां
---	--	---

॥ श्रीगुरुवाक्कवन्नाश्चरुत्तानि वदन्नाभिर्धुमिध्वानि ॥ डुरुममधुमाधिममिध्विदुःखनः यदमकुम्भारिरविष्ठगुणयथायथनवयुक्तयकृत्वागुणानिमद्याविलो कावेजयं नामवद्वादि कं कृत्वा आत्मगतं ॥ ३॥ यवयुक्तं ॥ मकुं वननां धिक् वजयुक्तं ॥ नभाडया ॥ ३॥ दवाश्च यादि यथा गे राथा साऊ नमिध्वो कला या ॥ गुरु वल्लयसुखराय दत्ता गनामिध्वो वेदवन्तदा रवयुक्ता ॥ गृहीत्वा स्वयं समावरन्त सर्वमवदिगवाभीया ककत्तौ नेक्षन्नाभिमिध्वो सर्ववारावन्त	त्वालकगुणयव ॥ वदन्निवाकयन्तायावः वसानमधुलं यद्वेदविदयिक्तादियुक्ताय ममिध्विदुःखययदवगाः ॥ ३॥ ॥ मिध्विदुःख	मिध्विनिमिध्वं रूतं ननादि स्थाननशुद्धो ममानिध्व जां कृत्वा रात्रिमयं कृत्वा ॥ वरः ॥ यद्वानं गयुक्त ॥ ३॥ कस्यादवाकि ॥ नमस्तुत्यवमिध्वि मरुमादिनी
---	---	--

॥ यदुनकृत्वा दयाववमातुषरुक्तायिगादि सर्वकारिकरुदकि ॥ मधुखलुदवद्वा रगावकमनदवावन् ॥ रुगायायाय काभीर्धनवकादिवभिर्रुतानां सत्त्वानां नाव यादः ॥ खयदानां यकथं युनियरुक्ता ॥ रागावा वमात्रोर्कवकि यथा गृह्णा मयेव मधुल्लिले दिदः ॥ वसः ॥ मिध्वं गृह्णा ॥ रुवाविमुक्तयायाः मिध्विगाश्च वामनवाधिसादा कृदकि ॥ ३॥ ॥ यमिध्विगानां ॥ कुं कुमनलेदिक्ता गुयायनय मदा रया ॥ सत्त्वानां मादधाय मकीयवदिगवरुक्ताय यातिविद्यथ	नाद ॥ दवद्वगृह्णा नावकवमनसत्त्वानां सदा त्वा ॥ मधुल्लिले ॥ यद्वेवकि मदात्माना वद्वा वा मदवयु ययना मगमं	यायकाविध्वं रूतं यथा नावकदः ॥ वसनायास यकं कल्पयन् ॥ रागा सर्वयायगना सर्वनवका दधमसांगी किं या युवकि सुवेवकि कुरुमिय
--	---	---

॥ नमः ॥ स्यामीमकुमुदादिनरिचिच्चदवगावृयंकल्यायितोवेसमधुसूययथ॥ स्वयवदवगाहदयं न द्वयं यदावलिखित्वा ददनाकुल्यादिकमुत्थाद्य गुरुवास्तुय यथा स्वयवदवगाहदयं यदावलिखित्वा कुला यावत्तदयविपूर्वमहायायिनः यावत्तयायका त्यायकं ननामविदस्य येऽक्षकमकुमहमंज ननामविदस्य कुण्डला लक्षणं यावत्तदमहमंज ननामविदस्य कुण्डला लक्षणं यावत्तदमहमंज	विरुमुत्थाद्य गुरुवास्तुयथ॥ ननामविदे दिमाययवयथा वदं कृत्य स्वयमवकासक यथावदाविदुःखं नममायि यवयथा याव यथावदाविदुःखं नममायि यवयथा याव	दस्यमकु कुं कमानालिखित्वा देवकमेकश्याम् रुवकिं न थागियस्तथ मुक्तादवनि कायसू ३६ काकिमायि यवयथा दवनि कायाव्यययं नरा
--	--	--

॥ कलसंयकासमिधुगच्छाकास्कावयथाविधियुक्तामनशा नमस्तुनेयवदवनि कायाव्ययवानेसिरुमुयदगं यकिं ॥ कदाविदवनि काया दवा रुमा डत्यना सुथवा कुमुसुस्थस्वयदादिषका लाहकलममवय वका मात्मानं गत्येव दर्शयति ॥ यदुवाकिमलं रुमशा भवतु रुयमानयथाविधि कुं खानां लायादिये काले ख॥ नमः ॥ यदुवा लभावाले यदुवा लभानि वा सो वा उगवास्तुयानि रुक्ता कर्ने नैव यानि वयं मा लादय न त्येव वा देवान ध्वजयद्वा	सुमहमकलनां विद्युदिवनि मलं स्थितमम कमस्वयं कुरुते मम नानि मर्कदगं नाका खल॥ ययकवजया गितो वेसमधुसूयय यथावदाविदुःखं नममायि यवयथा याव	इत्याग्निनिमिक्तानि यश्चारी ॥ अथ वा देवान वद नयानवकादि मुक्ति या यस्तु ननस्वर्गा य रुया थावय्येकदा वमदाः ॥ सदिहा लोखय थावम
---	---	---

॥ नानिष्ठाधनमकलकंजद्वयीतीकृत्यकार्यमगन्धमुरिमिषीकृत्ययनिमोवेरुदवसांवाक्येन ॥ उवाचिहवतुः यश्च वाकं वा सुधाकृतं वनं वा वा मकुमुदादि ॥
 ॥ नानिष्ठाधनमकलकंजद्वयीतीकृत्यकार्यमगन्धमुरिमिषीकृत्ययनिमोवेरुदवसांवाक्येन ॥ उवाचिहवतुः यश्च वाकं वा सुधाकृतं वनं वा वा मकुमुदादि ॥
 ॥ नानिष्ठाधनमकलकंजद्वयीतीकृत्यकार्यमगन्धमुरिमिषीकृत्ययनिमोवेरुदवसांवाक्येन ॥ उवाचिहवतुः यश्च वाकं वा सुधाकृतं वनं वा वा मकुमुदादि ॥
 ॥ नानिष्ठाधनमकलकंजद्वयीतीकृत्यकार्यमगन्धमुरिमिषीकृत्ययनिमोवेरुदवसांवाक्येन ॥ उवाचिहवतुः यश्च वाकं वा सुधाकृतं वनं वा वा मकुमुदादि ॥
 ॥ नानिष्ठाधनमकलकंजद्वयीतीकृत्यकार्यमगन्धमुरिमिषीकृत्ययनिमोवेरुदवसांवाक्येन ॥ उवाचिहवतुः यश्च वाकं वा सुधाकृतं वनं वा वा मकुमुदादि ॥
 ॥ नानिष्ठाधनमकलकंजद्वयीतीकृत्यकार्यमगन्धमुरिमिषीकृत्ययनिमोवेरुदवसांवाक्येन ॥ उवाचिहवतुः यश्च वाकं वा सुधाकृतं वनं वा वा मकुमुदादि ॥

॥ मांतिरिक्तावेत्यमालंकार्या ॥ यनिमायाहृत्वाकामारिधकं हृत्वायमगिनेयकिस्व (गैयेमेघन) ॥ रुक्मसर्वयवावृत्वादिधनमविदस्वारे मकुमुदगाभिमानयादि ॥
 ॥ यरुनः यायेयमायेदुर्गोकिविमादगल्ल ॥ मंशलाविजसूत्यादिनववावृत्तवृत्तमं ॥ मन्त्रगमसादानगीलकाकिदीर्यध्यानयसूक्त ॥
 ॥ रुयसावेनसायध्यावनालाकसादुर्गोकिरु ॥ अकिः यनवादानातुसंगयथायध्याव ॥ त्यादिनकृष्णवायधनाद्विवाहविवाधिमामा ॥
 ॥ धामनिवृत्ताष्टेस्यभामनविधायनायकावे ॥ ध्यायानरिरुस्यमारुयिहविधिययवि ॥ रुक्मवाधिविर्कनिधुर्गदीनवागघाटकसाद ॥
 ॥ यवावृद्धधर्मसंघमकुमुदागध्यादीनां वना ॥ द्वाष्टाष्टादीनां श्रयायेयमाभवांयल्लयायां रुदमूर्केनाकीनिसराकनेकीधिरं ॥ अथभवादयाउद्वृत्तयम

यावनाः साधिनोऽयं निर्यासं गाययित्वा यज्यते स्म ॥ अथ कथं यज्यते नवनयथायि रूयं द्वितीयं त्रितीयं च विदुः साधिनोऽयं नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः
 अथ विनययित्वा यथा नीलकण्ठस्य नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः साधिनोऽयं नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः
 अथ विनययित्वा यथा नीलकण्ठस्य नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः साधिनोऽयं नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः
 अथ विनययित्वा यथा नीलकण्ठस्य नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः साधिनोऽयं नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः

यानवायुवसुमन्वाः दक्षिणतः सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः सप्तमः
 अथ विनययित्वा यथा नीलकण्ठस्य नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः साधिनोऽयं नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः
 अथ विनययित्वा यथा नीलकण्ठस्य नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः साधिनोऽयं नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः
 अथ विनययित्वा यथा नीलकण्ठस्य नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः साधिनोऽयं नवनयथायि रूयं द्वितीयं च विदुः

याहकादक्षिणकरषवजंश्चावयग्नायामनलाहवधायनवस्तिनवधुःवलीयावकासाववजयकुविहयायदगवाकमवध्वद्वामधायणीनिवावकासातागधय निःश्यामवधुःअकोकीवथावृणदक्षिणवजध रासातोधावलीतोविजयसाधुकारयावृणलो यायदगवकावधुःकुविजयावकासाधयानिमधु वजमववरुनय्यविमानामावृणलोवधुःदक्षिणकरषवजधवायामनमवधवधवावजमनिमववदयस्त्रंयाविहयायदगवामनखद्वामधायणीनिवावका	यायामधकमसाधिवधवःवकासमावका वधुःदक्षिणकरषवजधवायामनमवधवः वावृणःणीवैनेधुःदक्षिणकरषवजधवा यायामधकमसाधिवधवःवकासमावका	मातावदयंमुनस्याविहयायक्वावयामकव धुःदक्षिणकरषवकावकावणीवदयकुनस्याविह १० यामधवधवधवावकावमनाविजयवजयगा यायामधकमसाधिवधवःवकासमावका
--	---	--

लीलाहवृणानीलवधुःवमृगावृणदक्षिणकरषवजधवायामनयधवधवावकावजनिवजानिलदवग्नावजानवदनाहकावृणवकावधुःकुविहयायदगवाकमवध्वद्वामधायणीनिवावकासातागधय दक्षिणकरषवजधवायामनयधवधवायामासांदधु वजधवायामनयधवधवायामासांदधु मावृणानीलवलाहमवःदक्षिणकरषवजधवायामनयधवधवायामासांदधु धवायामनयधवधवायामासांदधु	कमधुवधवधवावकावकावजानववकाव वजधवायामनयधवधवायामासांदधु मधुवधवधवावकावकावजानववकाव	असेववदानीलावकावकावजानववकाव मनयागवाविहोनिवावकावगवःवधवा नानीलवलाहमवःदक्षिणकरषवजधवायामनयधवधवायामासांदधु
---	---	---

॥ शुद्धवर्णायेनाकवटकटवृत्तमिदं शुद्धमस्तु दक्षिणकवासां यजय वृद्धवः ॥ यमासां येनू वदधुधवधुस्य यजयवीके ॥ वजयनवकिमीलवजयदक्षिण
 नवकधरावामनससाजानिवाधरा ॥ उद्वरात्तु ॥ दानावजयवैकामकावृत्तधुरुद्वरागीन ॥ वृद्धदक्षिणनवजधरावामननागायागधवः
 ॥ रवकमकावृत्तकेकमकावृत्तिमिदं वृत्तस्य ॥ रुनादक्षिणवजयवामनवजयकेकमका ॥ वधवा ॥ धीमाध्यामयधुदक्षिणनवजधरावीका ॥ गं
 मनसमदं गधाविधीमधीमो वदधुदक्षिण ॥ नवजधरावामनयजधरा ॥ सवस्वगीये ॥ नाहस्तावामनदक्षिणवजयधरा ॥ द्रव्याध्याम
 वृत्तमिदं वृद्धदक्षिणरुजासां वजयधरावामासां मदित्वं वधरावामासां नवनां वृद्धादीनां वधरावामासां यदिकेन काले वजयमकनकिशूवेककः

६३

यमिगे ॥ सर्वलायेकलाकारे राश्वदवमोदेरावनसम्पूर्वलाखा वृत्तिमिदं संख्यावसुधायकवजयमिगेयानीलयुग्मात्तामादायमधुनयदिने वृद्धावमृदा
 रुवना ॥ वजयवरावनसययदक्षिणवजयवः ॥ जघधुवादनं रुयावृद्धमधुनं वानाविदि
 नृयं वृत्तायादायसगिबसिवद्वदुद्धकाव ॥ होव ॥ नथावृत्ताकां यदकं युवथदिद्वज
 नृयवृत्तिमिदं वामाध्यासिना रुद्धा वजावय ॥ समादितामनसाद्याटयवृद्धवजयवः ॥ वरुधयं ॥ उं वजयटयवृद्धवृत्तिमिदं मृदाया
 रुवना ॥ द्विद्वजयुले संग्रहं वाकारु नगादृविदवयमसं कृद्धावावाद्याटनमृत्तामिनि ॥ नगादृद्धादिदितामिने कृत्तामयवतमयकलं सु

मयं वा वा नमूलमवेष्टीय लसा मदाद वदिवाग दवं सर्वो नलाय सकि मवेधानय विपुर्लु स वा संखय लव सधं वा वद्ववं ० वं कृत्वा र दं वदिः समकादि युगश्चानुलि फथका विनवजां कि न मोली मका वजाधिष्ठेन माकि नंय कं वा वधवायु सगानि माकि नं कृत्वा वदुवा वधायु स वद्वयं स्य यय लनाद वना आ सर्व वलानि जेद वाया गिरे क ह्म सां ता सद दवा वकि सवि यधिय ॥ मिलात्मा या न्ज वा ध्यानां ॥ आ ध्मा श्रिने य क्मान् सदन सर्व वी दी नां यं व वान वस्य व दयय	काधसि केरि या वे गृही नया वद्वमने मे रुगव का वद्वकं वा रया गु नाः संस्य या यव मा सि या रि य वं कृत्वा यव धम दौ व धा यव काधसि केरि या वे गृही नया वद्वमने मे रुगव का वद्वकं वा रया गु नाः संस्य या यव मा सि या रि य वं कृत्वा यव धम दौ व धा यव	या म डै वजा द व कं ॥ त्पना धा ल व स द या रि धयय ॥ द्वा वा कि मखं व वदि निदि नी यं कालं ॥ १२ यदा ॥ यदा द ज म न र य क्मान् सदन सर्व वी दी नां यं व वान वस्य व दयय
--	---	--

भागद न व रुः यथा मादि पूर्वक स्र वं गा रु थि ला वज य व न नी ला व कानि य विज य स ता स्त्री व व रु द्वा ल य ला म्वा व स नं वज क व व ना रु नी या म्वा व द्वा स्त्री या या वि क मा वा यि ज्वा व क वाने या धि नी न य य मा ला मा दा व क मे र्णा दि ना न ता वजा द वा थि ला मा व सं नि सु व द्वा र्णा दि ना य व न य व न म दा मा कं व रुग व रु य व मा गृही त्वा न् वं ध री स स य सि धि वज व न द्वा द व य द्वा दि नि ला आ रि था मा न सं यू क मा य क व ना न् वं कृत्वा व स न्ना वा वा व वं व दाय	या म डै वज स म यं य वि श्वा मि र्वा दी न य रुः कृत्वा ना मा ला म्वा द म गु ल य वि स सा मि र कृत्वा द वा रि य वं व द्वा म दा द य रु व द्वा म या म डै वज स म यं य वि श्वा मि र्वा दी न य रुः कृत्वा ना मा ला म्वा द म गु ल य वि स सा मि र कृत्वा द वा रि य वं व द्वा म दा द य रु व द्वा म	य वि र्वा मि र्वा र्था व र्ना वि रु य य ॥ य दं रु ग सि व द्वा म ख व धि म्वा य था व रु गु लं व द्वा वा दि या नि वज ना मा रि य कः रु ग व रु स वा न य वि र्वा मि र्वा र्था व र्ना वि रु य य ॥ य दं रु ग सि व द्वा म ख व धि म्वा य था व रु गु लं व द्वा वा दि या नि वज ना मा रि य कः रु ग व रु स वा न
--	---	---

यनः स्वाधिरुनं कुर्यात् यथा सिद्धिं वेत्ति यं दं वा वदतामि मे ॥ स्वनामादाय वं कृत्वा देवा वनमदा मदा वदतामि कुरुषुवा वा के देवा वनस्थान कथाय वदतामि ॥
 मानमावगयत् ॥ वजाहमि मे ॥ वजाहं वा वं
 श्रीरुवदावगमकुरुषुवा वा वदतामि मे ॥
 वज्रवसाधिरुनं कुर्यात् ॥ सत्त्ववजाहं श्रीवदतामि मे ॥
 लाजवैद्यवर्षिणी वा वाच्यवर्षिणी ॥ गगनं विष्टं मदा मदा वदतामि मे ॥ समयमवाप्तयत् ॥ सकृन्मना ज्ञा मा ज्ञानमकुरुषुवा वा वदतामि मे ॥ कृत्वा देवा वनमदा मदा वदतामि मे ॥

आवद्धावधीशुखयथायनुहंकारवधदेधैवाथीवेवायनादीसमयमदातिरुदकाल्यकयथेमासाधयत्स्वमकुमकार्यदृष्टानेददत्ताः॥३॥हं॥हं॥समयस्व
 समकुरुः॥समकुमालयददमिडाकवनि
 काधिमनरुवंगोवाङ्कजंसमादायकानिष्ठांका
 वेगाः॥समास्तुमध्यायमाकुमध्यायदयनर्ज
 ॥३॥समस्तुगुणाकुहृदिरुयसमुत्तायसाविरुक्तमधिमर्जनीमखदासनीगानयसर्गवागमस्त्रिमुदादिष्ठासमानवाच्यवकाकुमखनः॥३॥विनः॥३॥

माशाकर्तृनीमधुवज्जु	उत्थेनकर्तृनीद्यौया	अधिकमददंसा	वस्त्रासावज्जु	मृत्तेननि	लाग्नादीनांमुदक	धारुकावर्षे	कुशा	नयथा	वज्जु	वर्षे	वज्जु
यज्जुमर्मागुष्टा	सयसाविन	माविधी	अज्ज	लाग्नामखा	धारुका	मृदनी	भीयु	का	वज्जु	वर्षे	
नेयीजवमयुमा	विनयना	नयनकर्तृनी	सं	कावा	धुष्ट	गुष्टि	धुष्ट	गुष्ट	म	वज्जु	
धुष्टि	वज्जु	विदि	वज्जु	का	वम	वा	वज्जु	का	म	वज्जु	
वज्जु	नय	अथ	कं	वा	दी	नां	म	वज्जु	र	वा	ने

उं वज्जु रू दीका धाना य सर्वे वलादिः रुट् ॥ वज्जु रू दीका धि द माना लय कं रुट् ॥ उं वज्जु विधु व मर्मा धि स व या य मा

धिय कं रुट् ॥ अन्धानि मडाः	सव वजीगा	वसद	स्र	आधारा	धादि	सर्वे	वि	धा	रु	मानां	वि	का	या	म	कु	रु	कां	स	व	ज्जु	व	ज्जु	कं	वा	व	म	डा	सं	व	द	धु	र	वा	व	ज्जु	कं	का	वा	का	य	न																	
नव	न्या	वज्जु	कं	वा	वा	रु	व	ज्जु	म	द	कि	स	र्व	व	य	य																																										
वा	धि	न्या	म	रु	न्या	नि	व	न्या	नि	कं	वा	न	य	का	व	जी																																										
व	जा	की	ः	ध	म	व	जा	ः	म	ः	व	म	व	जा	ः	कं	रु	वां																																								
क	कं	॥	य	ला	द	नी	कं	॥	रु	ल	ज	म	कं	॥	स	व	जा	गी	कं	॥	स	ग	ध	गी	कं	॥	या	दि	ः	कं	॥	या	दि	कं	कं	॥	रु	ट्	व	कं	॥	य	धु	ः	म	ः	न	॥	व	ज्जु	ला	ग्ना	दी	नां	व	जा	व	न

श्ववज्जनि यथा यन वासु या न्ना वनास दाम्दा वद्धाः कर्म मदा रवने सद्धा दियं वज्जु के वडा विवे क्य व या कु सा व क य वा म य म दाम्दा व धि नियाः सा वि या या म म
 य नि वा कानि श्वां सु व व लु वा म म धां सु लि
 रि ता रा ज नः य वं य व दामि सा या व डा दि सं
 सा धि धि कृ ल लु व द जं स र्वे वि द्वा वि व नि कं
 श्च लु व ज त्व वा य नि धि ता वि या रा क म दाम्दा ग धं य सा वि ना य ना या धि कृ म् य म् न र्थे व वा म् धि सं स्य लु वा द व स र्वे न या वि व र्के ता व द्वा धि म दाम्दा
 वि वा रि धू क वि धू क म ध म लं लु व द म्दा
 रि ता रा व द व श्च र्ही वे कृ वा वा म व दं लु व द
 स र्वे व द कृ ल नां लु म दाम्दा नि व द य म्
 वि वे य द्वा व द वि धा र्के म स्य यं व द गृ ल रि की
 य र्ना व द म् शी रि धि य्वा म स र्वे व द कृ ल रि की
 य सा वि ना य य म् य द धि ना उं वा व म् धि र्मी

ग व शा वा मं सु व म् सं स्य लु सा ला वा धि द्वा दि ना द दि क्ष ना र्थे वा यि व ल म् दाम्दा य म् धि का म दाम्दा य वा के म् दाम्दा वाः आ द दि क्ष य म् ल वा य सा वि न लु वा म् धा द र्का
 ल क ल ग द स्य व द म् सा र्थे य वा वि ना द न म द
 वि धी नि य ना म दाम्दा रा म् थ सा दि मा र्थ व
 मा ख यं स र्वे व द कृ ल नां लु वा म व द्वा य म्
 व वः न र्थे व द्वा व म् दाम्दा रिं द य र्ही या वि य द्वा म् दाम्दा नि का कृ ला य वि य द्वा य द म व वा द लु म् धि य द्वा वि व म् दाम्दा य वि व र्के ता व धि म म य न स्य लु ला म् दाम्दा
 म् दाम्दा ग धा स यं व वं म् ल द द्वा य द लु व द
 म् दाम्दा र वा के वा म व द व धि वि धू ला वा कृ
 य र्हे आ म् दाम्दा व धि न य व द्वा मि म म य नां य म्

मातावदकावदस्यगामिका॥ मृद्विस्त्रिगोविदयनिकासुल्लवद्वानिकागामिकासमयाधवाकवदकावदस्यः यविकीर्तिनाभाहालासुल्लिङ्गमाकवदिवि		
कमलस्योन्मादनीसमयाधवाकवदस्य	योधुविद्वययाननीवाकवद्वनवद्वयस	दसाद्याविधीनत्थानि वनासमयाध्वनि॥ न
नामदादयानिदिक्कासुगमनास्यज्ज्वावधा	खद्विदिनत्थिवद्वानियाद्यनयांसदावद	ः कामे मृदाकवनिःस्रहाद्वियं वधुचिकं वदंते
माया मदासुल्लेखोन्मावनावद्वनीयाध्वनि	मनारुगवकोवेलोवावनेरुंदकान्धियं व	दलानिवदवनाहियनारिधियं धीवद्वद्व
कावादि लोभ्य वद्वमकुटावदमातायदाकारे यवोनरिधिविद्वत्॥ ननाइधंदवायूकं कृत्वा रानुगनावदनादि मयानकलसो नयुवाकवदधनवकादित्यविज्ञा		

कवानेवरावनादिमकुवद्वारुवणकंजयान्वाकं मुद्रमकुलं वाकानिदणययुयूवरावाधवकुयुगवद्वदणमकुमसमंयुल्लकमकां वासर्वसमान्य॥ नानाय		
कावधानिवेरावनानिवकुत्थानिविवेनंयय	कावधानिवेकुध्वययवाधुडंकावधधोव	ऊहं कावधवयविद्वययुवरावाधमेत्यननस
वेदयगानिर्वागययुयुवद्वमकुमंयुल्ले	वाह्वसर्वयुयानिवद्वानवधमदायक	न॥ डं वदयुयुहं वनिवयुयमदायारिमा
ऊहसर्वसदासर्वोष्णविलायनरागध्वकाम	थिवद्वानलन॥ डं वदवाध्वनल्लयन	याकृमदायुयुयावद्वमानिसानिमानिनेत्य
वद्वद्वानवध॥ डं वदध्वयहं वल्लयनयाध्वयमदासादिनयाध्वयघाटे कालकंदगसहसं सदसं सनयथात्ता रंत्ववायानियलकंदगसहसं गं वासर्वयुदीयाय		

दीयवर्णिवाल्लेगयकृत्तुसदसंयवलाकंवा नैथेववकानवर्णकंवाकालाकनंनयनयादीयमूदायकयायवियकययविकययवकल्लयमृत्तुदीवयन्		
निर्योनयन्वत्ययदावक्लदगसदसं	मनदगसंवावास्वस्विकमदिवःकुत्तान	नायकावावियरुकाणिनेथेवववकानवन
यविकययागुकावाग्लसवेधमाधमाद्यन्	त्यंनवादिथुदिवयन्निर्योनयन्वादग	वाद्यसदमाधिसदसंलगवाद्यानिहंकावः ॥८
धवाद्यानिमदाकेवकसंस्त्रयांकाताकुविरे	वाद्यकिःनयदगयकालागद्यथावायो	वंगामुद्रासुंछुवास्त्रुवीमृदंगयट
हंमुद्राकोमेलाकिनेयवोवावादननरुवाकुंमुलमकाटारेथयूदाधमडंकावधानिमकुगथायन्वत्यंनवावाद्यागकाममुयिकाहावाहंदावविना		

मृद्ववद्यायलाकिनागरुवंगाहकिगायथा दानवाधसूकल्लिगागावधानिववगानेघादेसाहिकानिववावडास्त्रुवामेयननाडंवदसंसाहादजवतमन		
रुगावदधमसाहननवदकमेकवाहवं	त्यथेवयन्वत्यंनवावदलाग्वाद्यस्ववि	वायूदाकिःवाधमृद्वीद्यमकवमिमदाकि
सर्वममुलयूदयन्वावजमृद्वयंवद्या	मर्जनादययगायकाधमस्त्रिदयंरुवकि	यनःवदकमुलममुलाकयादगवममदा
तिवायिसंयूयसर्वकाधकववेह्यिकगवस	वैमस्त्रार्थकवधंसर्वमोद्वग्नि ०	गवावाद्यवलिंदयादकवसाविकममुलायमे
रुयासवाजंसागिबंसमःसरकंकुमुमेःसदासकालिकादिहकिष्वाकावादिनायविकययूद्विदिश्रवासागमावरा ॥९॥कायंगधधूययूयदीयायंकादाकव		

कवदद्यानं उ यवेकावत्सुलाहिकावयनं ॥ ननः कावाहयलनः ॥ समदर्शयभूयैश्चमश्चादिसिः ॥ समुक्तवलिदं द्या ननादिस्केयदि किननुमसदां रुवकि ॥ ० ॥
 रशालीदायदस्तिनः याम्स्वायामवदाद्वर्गं ॥ यगादकिंकादिदलसुधायदविधनर्कसं ॥ न्यां कश्चावाहयनं ॥ मर्जन्यां कश्चादिना भवा
 सासमयमदा ॥ यशालीदयदनस्तिनाया ॥ वाहनमूदायाकर्कनीयसायदिसर्जनम ॥ दासज्जवासा मनु ॥ नमावदस्य वदीनीव ॥ १७
 जयाविनक्षरकसादा ॥ ० ॥ दादिकिणक ॥ नर्कनी कशुलाकालन कश्चायित्वा मश्चा ॥ मासुआरुनी ययवैश्वयवं गुप्तकोशक
 मश्चा ॥ मरावाहनमदा ॥ वाहनमदायां गुप्तकर्कनीयां वागीरमन्यसय मूदाभयस्यासय मूदाया कवमश्चा ॥ सिमखायं गुप्तकर्कनीनखायनकायाह्यदिम

कर्जनमूदामनु ॥ अथोद्येका वावित कलकल रुदुखिवेनालातविदूयाक्षयादा ॥ ० ॥ रायान्नासिमखाया नीमुरिमखकोशुवा म्साकववजयधमर्गं गुप्तय
 मर्वादिना वासिकादयाभका मवीयन वराज ॥ यक्षवयव म्सावाहनमूदा ॥ अन्नामिका ॥ यनः वाहनः ॥ सविनथिव क्त्वा मदाहदय
 यावयन ॥ समयमदा ॥ अनयेवानामिका म्सा ॥ याविसर्जनरुवकि ॥ म्सा मनु आयमाय ॥ सादा ॥ ० ॥ ननेमत्यसिमखसमयदस्ति
 तादिकिणक वमर्गि क्त्वा नर्कनी कश्चायवय ॥ मखमाकावजसंस्थया वासकलं कादिद ॥ गंधावयवामगर्कनी क्त्वायेत्वा नैमत्यवाय
 दनमूदा ॥ म्सा वाहनमूदाया वासकलं कादिद ॥ वस्तिनं लम मदानेजत्य समयमूदा ॥ वाहनमूदाया र्कजनमूदायका ॥ सविरुनरायं कवकवक

ब्रह्मादा ॥ ० वावायुमिसमयदसिनादिहकवर्जनगुह्यवकनथाजयदा ममस्त्रिहादिं संधाय वा मरुजं युक्कृगनावाहयववृषसावाहवमृदापुस्य
 नवदा ममस्त्रियात्वासाधनयकयाभमडा ॥ ॥ वावाहनमृदायास्त्रिहादिं नयसायविमर्जनं ॥ मदासकासा ॥ तृहयुटलृहिलिवाविदिन
 ० यादस्त्रिहादा ॥ ० वावायुमिसमयदसिनादिहकवर्जनगुह्यवकनथाजयदा ममस्त्रिहादिं संधाय वा मरुजं युक्कृगनावाहयववृषसावाहवमृदापुस्य
 सावयदादिहकवर्जनगुह्यवकनथाजयदा ममस्त्रिहादिं संधाय वा मरुजं युक्कृगनावाहयववृषसावाहवमृदापुस्य
 मदायां गुह्यं यसायविमर्जनमृदा मरुजं ॥ ० वावायुमिसमयदसिनादिहकवर्जनगुह्यवकनथाजयदा ममस्त्रिहादिं संधाय वा मरुजं युक्कृगनावाहयववृषसावाहवमृदापुस्य

मवाकसः युह्यनानागियायुगलं संधाय मधुमांसां विंशजं वावनावाहनावाहनमृदाया मधुमादयमसाकववदवधयागानायासाकववममयमडा
 मवाहनमृदाया मधुमादययसायविमर्जनं ॥ नामकुशाडं कवलीयखादा ॥ ० वा
 याकडातिहावाकनामिवागववदवधिवृ
 विरियविस्ववनवागकं कयोदिभनावाहन
 यास्त्रिहादिं नयसायविमर्जनमृदा मरुजं ॥ ० वावायुमिसमयदसिनादिहकवर्जनगुह्यवकनथाजयदा ममस्त्रिहादिं संधाय वा मरुजं युक्कृगनावाहयववृषसावाहवमृदापुस्य

० अरुणायदा

॥ रासमयदंष्ट्रमांशुयहसुहय ॥

सकृदायाकाविवलान्यायुत्तयामंयाइसु

गङ्गायामुत्पत्त्यां जायते नन्दनं दृष्ट्वा

वस्तुश्रुतसमयमद्वापेयावाहनमद्वायाव्यसा, ४९

यूथोवोस्वादाडंअमरस्वादाडंनस

स्य स्वादाग्नौ नृणां समं नृसमं रुचदमस्य वां द

॥ दयासूत्र ॥

विहृदियामेगमु

अनुवादार्थमभ्युद्यन्निदमकिरूपाय

नदनयं सुवात्तययसादयास्तु वायेमदु

सुखसंगमयुक्ता न्यायविशुद्धाधियामा

यादिनदावायुययल्लतद्वक्रयय्यययूक्ते

दत्तगुदचयवदिद्वारवेत्यादमवाशमय

मथनसुसावासद्वयं अनांयस्वमाविद

विद्युदिये यदि योय

कानावनायामेवमभ्यासनिवसक्तिर्यस्य ह्यः यमनाः समं धर्मालं धूयं वलं विधिं च रं ह्यनाकुलकुदवकुदं ॥ दक्षवर्मे सुरुतं यगं तु ॥ दिगर्हं नं वद
 नायक्यो ॥ ० ॥ विद्वाकुवदी सद्द
 वसीधे विमं कृशुक्रुयल्लि विधिं ह्यमृत्त
 यमानि अं कुरुयानि ॥ १ ॥ आयायनि वायु धन
 विद्यश्च ॥ एवैषानरूनाधियानि दयकुदं तु
 वदार्कियिनामदृष्टा दयसेमया कुदय
 वनागाधवाधवागुक्तगले समस्मा यानिय ॥ ६२
 निवकानिवदयं कुसकसकात्वेयदिभस
 रूना गुं क्रुक्रुद्याः साविता सलो न्याभस
 युरसमृगसुदने समगाः धूयं वलं यथा
 शीयानिवदयकुः कुक्रुक्रुदिद्युक्रुयि वं कुदं ॥ ६३ ॥ दक्षवर्मे सुरुतं यगं तु ॥ दिगर्हं नं वद
 नायक्यो ॥ ० ॥ विद्वाकुवदी सद्द
 वसीधे विमं कृशुक्रुयल्लि विधिं ह्यमृत्त
 यमानि अं कुरुयानि ॥ १ ॥ आयायनि वायु धन
 विद्यश्च ॥ एवैषानरूनाधियानि दयकुदं तु
 वदार्कियिनामदृष्टा दयसेमया कुदय
 वनागाधवाधवागुक्तगले समस्मा यानिय ॥ ६२
 निवकानिवदयं कुसकसकात्वेयदिभस
 रूना गुं क्रुक्रुद्याः साविता सलो न्याभस
 युरसमृगसुदने समगाः धूयं वलं यथा
 शीयानिवदयकुः कुक्रुक्रुदिद्युक्रुयि वं कुदं ॥ ६३ ॥ दक्षवर्मे सुरुतं यगं तु ॥ दिगर्हं नं वद

नत्वादिने ॥ ० ॥ वामगडयययुवद्वारिमुखायस्मिन् ॥ सर्वकर्मिक कृशुमध्याथी लोकाविजयमधुलं सर्वददनामदान् दाहवधकसमीनेवगदामय
 धिनाथी वक्रकै कालाधारा रुवगमयाष्टन
 नाद्रुनिंदद्या ॥ ॥ धीवेवावनादिमकुर्वय
 वक्राववेवावनादिमकुर्वालिखनमधुल
 नः वनायथावदमकुर्ववेवावनादियथाव
 याभियाच्यवगयिष्यामि सर्वसत्तादिना
 यधमाशुदममकनाभावदावायामहाग
 थमैगभ्रकृवमधुलववलायायायय
 विद्युमवाया ॥ गत्वा दृष्ट्वा ॥ साकिरुगवक्रमथागगाः काचित्तात्तामदावा नीरु ॥ ६४ ॥ दक्षवर्मे सुरुतं यगं तु ॥ दिगर्हं नं वद
 नायक्यो ॥ ० ॥ विद्वाकुवदी सद्द
 वसीधे विमं कृशुक्रुयल्लि विधिं ह्यमृत्त
 यमानि अं कुरुयानि ॥ १ ॥ आयायनि वायु धन
 विद्यश्च ॥ एवैषानरूनाधियानि दयकुदं तु
 वदार्कियिनामदृष्टा दयसेमया कुदय
 वनागाधवाधवागुक्तगले समस्मा यानिय ॥ ६२
 निवकानिवदयं कुसकसकात्वेयदिभस
 रूना गुं क्रुक्रुद्याः साविता सलो न्याभस
 युरसमृगसुदने समगाः धूयं वलं यथा
 शीयानिवदयकुः कुक्रुक्रुदिद्युक्रुयि वं कुदं ॥ ६३ ॥ दक्षवर्मे सुरुतं यगं तु ॥ दिगर्हं नं वद

रुगवकः सत्वाः सर्वो वराकन कामगुणमुद्राः समदामदाकारिभक्तुं दं वदकं कार मधुलं दृष्ट्वा वसवीयाय विगमा रुविद्यादि॥ सकिरुगवकः सत्वाः स
 चोर्थराकन कामगुणमुद्राः समयविद्याय लह नक्षदिष्टगकारुयां मय्युयथाय कामकरवीयाय विमाना सर्वोयनियूरीरुवे
 ७० शुभि॥ सकिरुगवकः सत्वाः नृत्तगीरुदा स्यता आदावयि यनया सर्वे गथा राग मदायान धर्मगान दक्षधायन दव कल मधु ६३
 लानियवि सकि॥ सर्वो सायनियूवयि संय ह नयन नूरु वर नियी निरु र्व सधु व कलयु सर्वे गथा राग कल मधु लामि र्णा रय
 रिमान् यवि सकि॥ नयां मया य मधुल य वग य यथा वं शि ग सुखात्मा समय भवद कं कार मधुल य व ग मय न॥ सर्वे वरियी लु म मुख सो मन र्पा से व

द्वनाथ सर्वोयाय गनियवगा॥ से मुख यथा दिनि वरु नाय वा सा निवय नरुगव चार्मिकाः सत्वाः सर्वे गथा राग गीत समाधियुक्तु मरि शो या ये वद्व वाधियु
 थयकाध्वनमादादि से य करुः ॥ क्रि शक॥ नयां मरु वद कं कार मधुल य व ग म कुनेव सर्वे गथा राग त्व मायिन दल सो ये सं
 गयन व धा सिद्धि विने विह्वया ॥ नरुः ॥ गे यय व ग य ॥ गनः य शि शाय दय वे गृही नन धा दन व वा सि द्ध सख व गृही नन य
 मय्य सार्थ के धका रुना राय या दयाः ॥ यो यै र्वे व द कं वां ॥ र्व मसा काम दा व नः ॥ श्रु श्रुं म दाना थ वाधि सख नयं दृष्टं ॥ दादि म
 समयं गत्वं सख न वद द स मन्नि ॥ न ना व द य दय विद य नील व सु निव स ना रु वी द य ख व दं क भादि द्वा ति या व व मुद्र य य वि द य मूख व द्वा ना भि र्था

आवा न्वायेनियनमाविगनिःनकाधयुधिवद्वावडीमंड्रीसूटयिनिदन्दावयम्॥ डं सुक्रुनिरुद्धं॥ डं गृक्रुगृक्रुद्धं॥ डं गृक्रुययगृक्रुययद्धं॥ आनयदा
 ४ रुगावनवजवाजद्धं॥ अः॥ अः॥ अः॥ अः॥
 लयहृगवगाववजवाकमगुल्लाववजद्धं॥
 नाद्यधुमादिगोयजां वंशमयमडां वद्धा
 कस्येगवजनायवुधद्धं॥ वाववासेसंगृहनेनाकममानधस्काश्ववजवाकमल्लाद्धं॥ वावेधात्युशगावयावयूद्धादिगृहनेनवास्यादिरेः॥ दं॥ दीः॥ अः॥ ४५॥

त्याकिः स्ववीरुवसि वृद्धसम्यात्ममानंवेकयं सुमाधुगयत् ॥ दैवज्ञं वंशजं ॥ निगथायै मधुगयाय वदत्ता दामवसारुवनि ॥ गदाद्यादृष्टुं दयम् ॥ ग
 नः सागो हि मधुवेरासि युक्तात्वा सुसमादिनं ॥ गानिदरुं सर्वयायनी निलक्ष्ममवनः ॥ स्यगु ॥ दैवसर्वयाय दहनवजाय स्वाहा ॥ द
 दिक्षरुसुवकुम्भनिवेः याययानि कृमिकृताः ॥ दैवानमध्यायि विचरुर्जन्या गृह्णादामय ॥ रुपावकादामकुलुनिर्मल्यहाला कलावजस
 स्यगवीरयाय दक्षमानंवेकयं ॥ गगः य ॥ नः वंशवशकथेयवक्ष्यवशयनियममा ॥ विनाकेनवमायियाद्यावत्सारुवनि ॥ गग्याने
 यकं न रुवागेय्यवे सुस्थावक्षारि ह्लादिने लानिरुगदध्यादव रुवागे नकः ॥ गगायि ह्यस्य गदायूनष्टं वदमादसंगुत्तादि ल्यादि गगमज्ञायै स्वादुमाद्ये गत्ये ॥

वसववकीमुदोस्हाटयन्नासंवदाविद्यावजसवकाहमजवधियादवयावसववकाहममुदांवदियाहदावजकमेकाधमडांवचनीयानवसकिनेधयत्यकिना नसत्यजिह्वाविधेयवदीजवजव्वनेवका ॐ नायवयवविमोसिधिकाकमस्तानालासस्य ॐ वदसवखयत्ययवदद्याहनामकभ्य सयावद्वेनावनययकदभयिभ्रमकःनेधवजत्यादिनागियाददययवजमूदाभादयराकनावाकमधुलास्यकववजमधुलंयुर्वेहालासिमुखंसंमि	वांगमभसववथेयानेभमस्तानालाभा वांगमभिवधयह॥ॐ यानेमृदामेमंसव वः॥दद्याहयानेसवादावजवद्वनूल वः॥दद्याहयानेसवादावजवद्वनूल	दामधुलंकाययवकायानेधवजकारिचिगित मदायलव्वनेभननामूखवचधमयदनन ६६ वंगवजययानेभननामधुलवजांकुदाव वंगवजययानेभननामधुलवजांकुदाव
--	--	---

त्यावाकनावागिवांशीवजहंकावमूदायासवववजादिरिभाधियायमदा मूदायाभनःयावेद्यायासोवेक्रुमधयूयादिरिवस्यवाघदत्ताठुवदयकावाव दिदिहृत्पशंखानिनादिमेखरनामजवभा भारियकशुभारिषिवरायनःययादिरिना दिदिधादवाययादिकमारेवकाधुभाक समयमडागेनयकायशीहंकावादिनययपुनरयननाक्षरुवगमसहमयावेकयविकयकलमंकुला॥ॐ वजाधियानेखाभारिषिवामिददामरावः	आनेनेनेनघातोनावददकारियकनह आद्यशारिषियूजांजावयूजयगुगानिवा व्वनेभावायानेवकाठुशीवजहंका व्वनेभावायानेवकाठुशीवजहंका	ननामडासिधकनमकटवद्वयखाधियानेन क्षयार्थवलेनवजांजलिनायधमृदुरुवमह वमदयानेवकायानेखायायथानेदिधय वमदयानेवकायानेखायायथानेदिधय
---	--	---

ॐ वृहं सवितृ नमो लोकाय रं वज्र वज्र धरा वज्र वज्र स वज्र वज्र वज्र वा या स दा वा या वज्र या नि न मा मु रा वज्र वज्रा वज्र वज्र वज्र का ला म दा का ला वज्र व वाम दा व वा वजा य धि म दा य वज्र या धि म दा ॐ धि वृहं वा धि वृहं य मु व ज्ञ वजा दा व म दा दा व नि द ह दा वि रु णा वज्र सी मा म दा व द व जा या द ग दा रु म णा के षा नि वा व ने नो द वृ द ते न व सी वा व मा णा धि सा धि य सा धि वज्र सा धि य द र्श क ष वज्र यी नि म दा यी नि वज्र ध वज्र सं वा व वज्र न ज म दा	या नि वज्र या णा य धि वृहं वज्र वज्र ह ज्ञ म दा वज्र सा या वि दा व वा णा वज्र रु मु म दा य द कृ ण धि मा धि य रु म वज्र व वा रु व ना ल वज्र	हृ द्य म दा म द म दा दा धि वा वज्र य ज्ञा म दा वा वज्र य ज्ञा वि णा धि वा ण वज्र वा धि म दा व द वज्र ला द म रा यं वा णा वज्र य द म दा य द वज्र
---	---	---

वज्र का ला य रु मा कृ त वज्र धा वा म दा धा व धन य रु रं म दा म धन म णा वा स म म स वा सा स वा सां या वि वृ व क ष वजा वि व वा क ला ये वज्र धि ज्ञा रु द धि णा व ज रु न म दा रु न वि षा वा णि ग णा वि क णा द अ व ला व य व दा वा ण वि षा वि का रु ल म ल वा वा वा धा न रु ल दा से रु दान क स वा य य वि ने णा वि षा वा ट का वृ क्त्वा ग द व म वा कृ णा मा या वि व जि ना व दी स नी सू वा द वा द व अ वा ग द वा म दा ला दा रु वा रु वा वि णा धि क णा ण क दा का	ला रु ल म दा वा ल का ला रु ला वि वा नि क वा व जा न व य व द म व लु य ज्ञा न धा रु वा व ध र मू वा न क म द मा कृ कृ णि ला वा णि वा	आ व रु वा मा म दा वा म वा मा य या वि ना म वा म रु स मू र्य य रा य रा ला दि गा दा रु या न ग रु णा नं गा वि रु ध र्मा त्मा वि क ला ण व
--	--	---

महाशुद्धः वृद्धावृद्धयवाधवाः वृद्धात्मावृद्धवृद्धीवृद्धसत्त्वावृद्धवाधोसमकुरुदामदुरुदसर्वलक्षणलक्षणधसर्वधरुषयवायेसर्ववदमयशुची	दाक्षसूत्रवृद्ध्यावायेवृद्धयाधिसमास	वादिनि॥ ० ॥ ॥ दंमवावृद्धगवात्ररुम
शिविरायनलिखत्यत्रोयिधायदर्थनः॥	वगवृद्धगवृद्धयवृद्धगवृद्धादिदिनस	खायाफायरागवनासायिनमस्यनदनेने
ॐ नमः शिवाय नमो भगवते वासुदेवाय ॥	धनराजा राजस्यनथागवस्याइहेकसं	माकं वृद्धयावृद्धयावृद्धः समाकः ॥
॥ ० ॥ ॥ यधमादुरुयसावाकुरुनयाकथागताकवदकवाधयानिवाधवदंवादीमहाशुद्धः ॥ ॥ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ यनिवरधकमलधिलेधिसाविसा		

वावृद्धीमत्मानाध्वरीधदवगावतल्लायसादददीयमानमानात्रववायेकलानिलकरुनमध्वदनयालध्वमहा राजाधिराज राजावृद्धसकवराजववा	वकादवानां सदासमवादिजानीं यरुधाः	वृद्धयावृद्धयवृद्धी ० ॥ दानयानिधीवा
विश्वरूपीरूप्याल्लमल्लदवयवमरुद्धा	महाविदावसापियाठमागीयवादेसागृ	दावृद्धयवृद्धयवृद्धी ० ॥ दानयानिधीवा
धमलुयमदानमवसिवागुंठिनमल	गवयविवावानां ॥ १ ॥ यदकयनान	दावृद्धयवृद्धयवृद्धी ० ॥ दानयानिधीवा
दवसासायाध्वयनीवृद्धादानयानेस		द्ववगावायाध्वयमागायिरुयवृद्धममन
ॐ नमः शिवाय नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ यनिवरधकमलधिलेधिसाविसा		

यथाकर्ममद्वयं मया दत्तं रुच्यं नमिवा न सा विना वै कर्कटं नमिवा न वदमासीत् तर्हि दिनज्ञासं कुरुयात् नृश्वरिणीं श्रीं नमः श्रीं वदमासनं श्रीं वदमासनं	संयुक्तं कलामिना ॥ ॐ ॥	॥ गुरुमङ्गलं रुच्यं ॥ ॐ ॥
यत्ननन्ति श्वेतं वासं सुधी नयति नयेषु	शासनं नयति नयति नयति नयति	वदन्ति ॥ ॐ ॥ सुतं ॥

ASHA ARCHIVES 3610

